भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 254 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज बुधवार 08 सितम्बर 2021

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

स्थायी सुख, शान्ति व निर्भय वातावरण के लिए "क्रियायोग अभ्यास करें" सत्य की अनुभूति में सभी प्रकार के क्लेश हमेशा के लिए दूर हो जाते हैं। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि क्रियायोग के द्वारा हम सत्य से जुड़ जाते हैं। ज्ञान, शक्ति, शान्ति, आनन्द, नाम-यश, धन आदि के लिए मनुष्य को दर-दर भटकना पड़ता है, और प्राप्त न होने पर मनुष्य में हिंसक प्रवृत्ति प्रकट होती है। क्रियायोग में भक्ति दृढ़ होने पर ज्ञान, शक्ति, शान्ति,आनन्द, धन आदि सब कुछ स्वयं मनुष्य के पास आ जाते हैं।

क्रियायोग प्राचीनतम् एवं नित्य नवीन पूर्ण विज्ञान है। ईश्वरीय नियमों के अनुसार कलिकाल में क्रियायोग का ज्ञान विलुप्त हो गया। आरोही द्वापर युग के आते ही मृत्युंजय अमर गुरु श्री महावतार बाबा जी द्वारा क्रियायोग को पुनर्जीवित कर पुन: परिष्कृत किया गया। उन्नीसवीं शताब्दी में महावतार बाबाजी ने क्रियायोग को लाहिड़ी महाशय जी के माध्यम से मानवजाति को दिया। क्रियायोग ही सनातन धर्म में वर्णित यज्ञ है। क्रियायोग ही वेदपाठ है। क्रियायोग अभ्यास से मनुष्य को अपने वास्तविक स्वरूप "अहंब्रह्मास्मि" की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

स्वामी श्री योगी सत्यम्
क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान
प्रयागराज

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

अफगानिस्तान में तालिबान कैबिनेट का गठन, मोहम्मद हसन प्रधानमंत्री और अब्दुल गनी बरादर बने डिप्टी पीएम

नई दिल्ली (एजेंसी)। आखिरकार अफगानिस्तान में तालिबान सरकार का गठन हो ही गया। तालिबान ने अपनी नई सरकार का ऐलान कर दिया है। तालिबान की नई सरकार में मुल्ला मोहम्मद हसन अखुंद को अफगानिस्तान का प्रधानमंत्री बनाया गया है। अब्दुल गनी बरादर को देश का नया उप प्रधानमंत्री बनाया गया है। न्यूज एजेंसी "इइ" ने इस बात की जानकारी देते हुए बताया है कि तालिबान की सरकार में सिराज हक्कानी को आंतरिक मामलों का मंत्री बनाया गया है। तालिबान के मुख्य प्रवक्ता ज़बीउल्लाह मुजाहिद ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान बताया कि मुल्ला मोहम्मद हसन को अहम जिम्मेदारी दी गई है। तालिबान के को-फाउंडर रहे अब्दुल गनी बरादर को उप प्रधानमंत्री की जिम्मेदारी दी गई है। तालिबान के संस्थापक मुल्ला उमर के बेटे मुल्ला याकूब को रक्षा मंत्रालय की जिम्मेदारी दी गई है। खूंखार हक्कानी नेटवर्क के नेता सिराजुद्दीन हक्कानी को आंतरिक मामलों का मंत्री बनाया गया है। इसके अलावा सिराजुद्दीन हक्कानी को तालिबान के उपनेता की जिम्मेदारी भी दी गई है। काबुल में एक सरकारी कार्यालय में तालिबान के प्रवक्ता ने कहा कि यह कैबिनेट अभी पूरा नहीं है, यह सिर्फ कार्यकारी है। तालिबान के प्रवक्ता ज़बीउल्लाह मुजाहिद ने कहा कि हम देश के अन्य हिस्सों से भी लोगों को इस कैबिनेट में शामिल करने की कोशिश करेंगे।

तालिबान ने अफगान के लोगों से वादा किया था कि देश में एक समावेशी सरकार बनाई जाएगी और महिलाओं के अधिकारों का ख्याल भी रखा जाएगा। तालिबान ने यह भी कहा था कि सरकार में शीर्ष स्तर पर महिलाओं की भागीदारी भी सुनिश्चित की जाएगी। तालिबान ने अमिर खान मुत्तकी को अपना विदेश मंत्री बनाया है। अमिर खान दोहा में तालिबान की मध्यस्थता कर चुके हैं।गौरतलब है कि तालिबान द्वारा लंबे वक्त से सरकार बनाने की तैयारी की जा रही थी। हालांकि, दो-तीन बार ऐलान टाल भी दिया गया था।

मोस्ट वॉन्टेड होम मिनिस्टर: 37 करोड़ रुपए का इनामी अफगानिस्तान का गृहमंत्री

13 साल पहले भारत को जख्म दिया था, आईएसआई का एजेंट

काबुल (एजेंसी)। 20 साल बाद अमेरिकी सेना ने अफगानिस्तान छोड़ा। 20 साल बाद ही एक बार फिर तालिबान ने हुकूमत का औपचारिक ऐलान कर दिया। तालिबान घोषित आतंकी संगठन है और जाहिर सी बात है कि उसकी सरकार में दहशतदों को ही जगह मिलनी थी, और मिली भी। एक नाम और उसका ओहदा या कहें पोर्टफोलियो अमेरिका और दुनिया को चौंका रहा है। ये नाम है सिराजुद्दीन हक्कानी। वो कितना खूंखार आतंकी है, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अमेरिका ने उस पर 50 लाख डॉलर (इंडियन करंसी के मुताबिक करीब 37 करोड़ रुपए) का इनाम घोषित कर रखा है।सिराजुद्दीन और उसके पिता ने 2008 में काबुल के भारतीय दूतावास पर भी हमला कराया था। इसमें 58 लोग मारे गए थे। 2011 में अमेरिका के ज्वॉइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ रहे जनरल माइक मुलेन ने हक्कानी नेटवर्क को पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी घ्घ्घ् का दायां हाथ और एजेंट बताया था।फिदायीन हमलों का इतिहास कई दशक पुराना है। माना जाता है कि श्रीलंका में सिविल वॉर के वक्त इनकी शुरुआत हुई थी। लेकिन, अफगानिस्तान में फिदायीन या आत्मघाती हमले शुरू करने वाला हक्कानी नेटवर्क और खास तौर पर यही सिराजुद्दीन हक्कानी माना जाता है।

ब्रिक्स सम्मेलन को संबोधित करेंगे मोदी, रूस, चीन समेत कई देश होंगे शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी गुरुवार को वचुर्अल माध्यम से ब्रिक्स देशों के तेरहवें शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे। इस सम्मेलन के सदस्य देशों में ब्राजील, रूस, चीन, भारत और दक्षिण अफ्रीका शामिल है। भारत वर्ष 2021 में ब्रिक्स की अध्यक्षता कर रहा है। इस बैठक में ब्राजील के राष्ट्रपति जाइर बोलसोनारो, रूस के राष्ट्रपति व्लादीमीर पुतिन, चीन के राष्ट्रपति शी चिनपिंग और दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति साइरिल रामाफोसा उपस्थित रहेंगे। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल, न्यू डेवलपमेंट बैंक के अध्यक्ष माकोर्स ट्रॉयजो, ब्रिक्स बिजनेस काउंसिल के अस्थायी अध्यक्ष ओंकार कंवर और ब्रिक्स विमेन्स बिजनेस एलायंस की अस्थायी अध्यक्ष डॉ. संगीता रेड्डी भी शिखर सम्मेलन में उपस्थित राजाध्यक्षों के सामने अपने-अपने दायित्वों के तहत साल भर में किये काम काम का ब्योरा प्रस्तुत करेंगे।

शिखर सम्मेलन का विषय अंतर-ब्रिक्स निरंतरता, एकजुटता और सहमति के लिये सहयोग है। भारत ने अध्यक्ष के रूप में अपने कार्यकाल चार प्राथमिक क्षेत्रों का खाका तैयार किया है। इन चार क्षेत्रों में बहुस्तरीय प्रणाली, आतंकवाद से मुकाबला, सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये डिजिटल और प्रौद्योगिकीय उपायों को अपनाना तथा लोगों के बीच मेल-मिलाप बढ़ाना शामिल है। इन क्षेत्रों के अलावा राजाध्यक्ष कोविड-19 महामारी के दुष्प्रभाव तथा मौजूदा वैश्विक और क्षेत्रीय मुद्दों पर भी विचारों का आदान-प्रदान करेंगे। प्रधानमंत्री मोदी दूसरी बार ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे। इसके पहले वर्ष 2016 में उन्होंने गोवा शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता की थी। इस वर्ष भारत ऐसे समय ब्रिक्स की अध्यक्षता कर रहा है, जब ब्रिक्स का 15वां स्थापना वर्ष मनाया जा रहा है। शिखर सम्मेलन की विषयवस्तु में भी यह परिलक्षित होता है।

अमरोहा : पूर्व भाजपा सांसद कंवर सिंह पर 65 करोड़ की ठगी का मुकदमा दर्ज

अमरोहा (एजेंसी)। दिल्ली पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा ने भारतीय जनता पार्टी के पूर्व सांसद कंवर सिंह तंवर के खिलाफ रियल एस्टेट कंपनी के साथ कथित रूप से 65 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी के आरोप में मामला दर्ज किया है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने इस मामले की जानकारी देते हुए बताया कि संपत्ति विवाद के मामले में पिछले हफ्ते मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट ने पुलिस को तंवर के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने का आदेश दिया था। जल्द ही उनसे पूछताछ की जाएगी।

कोविड-19 की तैयारियों पर कोर्ट ने मणिपुर सरकार की आलोचना की

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मणिपुर में कोविड-19 पृथक-वास केंद्रों की "दयनीय हालत के लिए सोमवार को राज्य सरकार की खिंचाई की और कहा, "हम आपको चरित्र प्रमाण पत्र नहीं देने जा रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि कोविड-19 के समय न्याय सुनिश्चित करने का केंद्र, उच्च न्यायालय थे और वह राज्य सरकार के खिलाफ पारित आदेश में हस्तक्षेप नहीं करेगा। न्यायमूर्ति डी. वाई. चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति हिमा कोहली की पीठ ने एक जनहित याचिका पर पिछले वर्ष उच्च न्यायालय द्वारा मणिपुर सरकार के खिलाफ पारित दो आदेशों के विरोध में दायर याचिका खारिज कर दी। ये आदेश अस्पतालों में सुविधाओं और कोविड-19 पृथक-वास केंद्रों से जुड़े हुए थे। पीठ ने कहा, "हम आपको चरित्र प्रमाण पत्र नहीं देने जा रहे हैं। कोविड-19 के समय उच्च न्यायालय न्याय सुनिश्चित करने के केंद्र थे। माफ कीजिए, हम आदेशों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। राज्य सरकार की तरफ से पेश हुए वकील पी. रमेश कुमार ने कहा कि आदेश एक जनहित याचिका पर उच्च न्यायालय द्वारा पारित किए गए थे और कुछ निर्देश दिए गए जो लागू करने योग्य नहीं हैं।

पीठ ने कहा, "कोविड-19 केंद्रों में सुविधाएं दयनीय थीं। आपके पास महिलाओं एवं पुरुषों के लिए अलग शौचालय भी नहीं थे। यहां तक कि बिस्तर के चादर भी 15 दिनों बाद बदले जाते थे। पृथक-वास केंद्रों के लिए चिकित्सक नहीं थे। उच्च न्यायालय ने काफी धैर्यपूर्वक आदेश पारित किए हैं, हम उनमें हस्तक्षेप नहीं करेंगे। उच्च न्यायालय ने राज्य सरकार को कोविड-19 संकट से लड़ने के लिए नियम बनाने सहित कई दिशानिर्देश दिए थे।

देश में टीकाकरण का आंकड़ा 70 करोड़ के पार, महज 13 दिनों में लगीं 10 करोड़ डोज

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोरोना वायरस से जंग में देश ने एक बड़ा लक्ष्य हासिल कर लिया है। अब तक देश भर में 70 करोड़ से ज्यादा टीके लग चुके हैं। यही नहीं 60 करोड़ से आंकड़ा 70 करोड़ तक पहुंचने में महज 13 दिनों का ही वक्त लगा है। कोरोना वैक्सीनेशन की शुरुआत इस साल जनवरी में हुई थी और तब से अब तक इसकी स्पीड में लगातार इजाफा हो रहा है। पहले 10 करोड़ टीके लगने में जहां 85 दिनों का वक्त लगा था। वहीं यह आंकड़ा 10 से 20 तक पहुंचने में 45 दिन ही लगे थे। उसके बाद से लगातार कोरोना वैक्सीनेशन की रफ्तार में इजाफा देखने को मिला था। 20 से 30 करोड़ डोज

29 दिनों में और फिर अगले 34 दिनों में यह आंकड़ा 40 करोड़ तक पहुंच गया था।इसके बाद अगले 10 करोड़ यानी 50 करोड़ का लक्ष्य 20 दिनों में हासिल हुआ था। फिर यह अंतर और कम होते हुए 19 दिनों का ही रह गया था। अब यह महज 13 दिन ही रह गया, जब कोरोना वैक्सीन के टीके लगाने का आंकड़ा 60 से 70 करोड़ तक पहुंच गया है। देश में 16 जनवरी को कोरोना वैक्सीनेशन की शुरुआत हुई थी और पहले राउंड में देश भर में हेल्थ वर्कर्स को टीका लगाया गया था। इसके बाद 60 साल से अधिक के बुजुर्गों को इस दायरे में लाया गया था और फिर 45 साल से अधिक आयु के लोगों को इसमें लाया गया था। इसके बाद 1 मई से देश में 18 साल से अधिक आयु के सभी लोगों को टीका लगाने का अभियान शुरू किया गया था। देश में 70 करोड़ टीके लगाए जाने का लक्ष्य हासिल करने की जानकारी देते हुए हेल्थ मिनिस्टर मनसुख मांडविया ने ट्वीट किया है। उन्होंने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी की लीडरशिप में यह सफलता हमें मिली है और तेजी से वैक्सीनेशन का अभियान आगे बढ़ रहा है। इसके साथ ही उन्होंने वैक्सीनेशन के अभियान में लगे हेल्थ वर्कर्स और टीका लगवाने वाले लोगों को भी वैक्सीनेशन में तेजी लाने का श्रेय देते हुए धन्यवाद दिया।

मैनपुरी में बोले अखिलेश यादव

शिवपाल के लिए छोड़ेंगे सीट उनके समर्थकों का भी सपा में सम्मान होगा

मैनपुरी (एजेंसी)। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने मंगलवार को मैनपुर में कहा कि भाजपा की केंद्र और राज्य सरकारों पर जमकर हमला बोला। कहा गाय और गंगा का सम्मान होना चाहिए। लेकिन इन सरकारों में न गंगा साफ हो पाई और न गाय का सम्मान हो पाया। भाजपा की दोनों ही सरकारें दुनिया की सबसे झूठी सरकार हैं। भाजपा ने अपने संकल्प पत्र से किसानों की आय दोगुनी करने और डेयरी उद्योग को बढ़ावा देकर ग्रामीण विकास करने के दोनों पन्ने फाड़ दिए हैं। शिवपाल के सवाल पर अखिलेश यादव ने एक बार फिर कहा कि उनकी पार्टी छोटा दल है। वह पहले भी कह चुके हैं कि उनके लिए सीट छोड़ी जाएगी। उनके समर्थकों का भी पार्टी में सम्मान होगा। अखिलेश यादव ने कहा कि सहायक नदियां जब तक साफ नहीं होंगी तब तक गंगा कैसे साफ हो पाएगी। मैनपुरी में ही ईशन नदी, काली नदी और पास की यमुना, चंबल नदी की सफाई जब तक नहीं होगी तब तक गंगा साफ नहीं हो सकती। भाजपा के हिंदुत्व के सवाल पर अखिलेश ने कहा कि वह भी हिंदू है। बहुत से लोग अगरबत्ती जला कर घर से निकलते हैं। लेकिन भाजपा के लोग अगरबती नहीं जलाते बल्कि नफरत फैलाने की बात करते हैं। देशभक्ति की बातें करने वाली भाजपा की सरकार राष्ट्रीय संपत्ति को बेच रही है। यदि किसी को एयरपोर्ट चाहिए, जहाज खड़ा करने के लिए पोर्ट चाहिए, बिजली लाइन, टेलीफोन लाइन, बिजली घर कुछ भी चाहिए सिर्फ पैसे ले आइए भाजपा सरकार सब कुछ दे देगी। अखिलेश ने कहा कि मैनपुरी जनपद में मोहब्बतपुर के निकट बहुउद्देशीय मंडी का निर्माण होना था। लेकिन इस सरकार ने मंडी का निर्माण नहीं होने दिया। मैनपुरी के लोग जानना चाहते हैं कि इन 5 वर्षों में मैनपुरी में कौन सा नया काम भाजपा सरकार ने कराया है। केंद्र और राज्य की डबल इंजन की सरकारों के ड्राइवर भाग गए हैं।भाजपा की विकास नहीं कराना चाहती। मैनपुरी में सैनिक स्कूल बनाया गया। अस्पताल का विकास हुआ। बिजली, सड़कों की व्यवस्था कराई गई। लैपटॉप बांटे गए। विद्याधन बांटा गया। समाजवादी पेंशन से लोगों को लाभ दिलाया गया। लेकिन लेकिन भाजपा सरकारों ने सब कुछ बंद कर दिया है।

पोर्न फिल्म केस: एक्ट्रेस गहना वशिष्ठ की अग्रिम जमानत की अर्जी बॉम्बे हाई कोर्ट में हुई खारिज

मुंबई (एजेंसी)। पोर्न फिल्में बनाने से जुड़े केस में एक्ट्रेस गहना वशिष्ठ की अग्रिम जमानत याचिका बॉम्बे हाई कोर्ट ने खारिज कर दी है। गहना वशिष्ठ पर महिलाओं को पोर्न फिल्मों में एक्टिंग के लिए धमकी देने और पैसों के नाम पर उन्हें बहकाने का आरोप है। उनकी याचिका पर सुनवाई करते हुए हाई कोर्ट के जज जस्टिस एसके शिंदे की बेंच ने उन्हें बेल दिए जाने से इनकार कर दिया। इस मामले में गिरफ्तारी से बचने के लिए बीते महीने गहना वशिष्ठ ने उच्च न्यायालय में अर्जी दाखिल की थी। गहना के खिलाफ महिलाओं की निजता के हनन के लिए सेक्शन 354-सीईडी के तहत केस दर्ज किया गया है।

राहुल गांधी ने की एनईईटी परीक्षा स्थगित करने की मांग, बोले- छात्रों को परेशान कर रही सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नेशनल एलिजिबिलिटी कम एन्ट्रेन्स टेस्ट... ऊँ) को स्थगित करने की मांग करते हुए मंगलवार को कहा कि छात्रों को एक निष्पक्ष मौका मिलना चाहिए। उन्होंने ट्वीट किया, ठभारत सरकार को छात्रों की परेशानी नहीं दिख रही है। नीट परीक्षा को स्थगित करिये। छात्रों को निष्पक्ष मौका दीजिये। मेडिकल प्रवेश परीक्षा 2021 को स्थगित करने की मांग को लेकर दायर याचिका को सुप्रीम कोर्ट ने रद्द कर दिया है। मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश (स्नातक कोर्सों) के लिए होने वाली राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (ऊँ) 12 सितंबर 2021 को होगी। सीबीएसई बोर्ड की कम्पार्टमेंट/प्राइवेट/पत्राचार परीक्षा में भाग लेने वाले छात्रों के एक समूह की ओर से नीट परीक्षा को स्थगित करने की मांग की गई थी।

सरकार बनते ही ब्राह्मण उत्पीड़न की जांच और दोषियों को सजा : मायावती

लखनऊ (एजेंसी)। बसपा सुप्रीमो मायावती ने मिशन-2022 को फतेह करने के लिए संगठन के लोगों को मूल मंत्र देते हुए यह साफ कर दिया कि वह वर्ष 2007 की तर्ज पर ब्राह्मण कार्ड खेलेंगी। यह भी कहा कि सत्ता में आते ही ब्राह्मण उत्पीड़न की उच्च स्तरीय जांच होगी और दोषियों को सजा दी जाएगी। उन्होंने बिकरू कांड का नाम भले ही नहीं लिया लेकिन यह जरूर कहा कि इस कांड की पूरे देश में चर्चा रही। मायावती मंगलवार को लखनऊ में माल एवेन्यू स्थित पार्टी कार्यालय में प्रबुद्ध विचार गोष्ठी के समान समारोह को संबोधित कर रही थीं। बसपा कार्यक्रम में अमूमन जय भीम के नारे लगते थे, लेकिन प्रबुद्ध वर्ग विचार गोष्ठी में जय श्रीराम और हर-हर महादेव के नारे लगे। वर्ष वर्ष 2007 की तरह एक बार फिर से हाथी नहीं गणेश हैं ब्राह्म विष्णु महेश हैं, ब्राह्मण शंख बजाएगा हाथी बढ़ता जाएगा के खूब नारे लगे। उन्होंने कहा कि संघ प्रमुख कहते हैं कि भारत में हिंदुओं और मुस्लमानों के पूर्वज एक जैसे हैं, तो भाजपा के लोग मुस्लमानों को गोद लिया हुआ क्यों समझते हैं। उन्होंने कहा कि दलित वर्ग के लोगों पर बसपा को शुरू से गर्व रहा है कि उन्होंने बिना गुमराह और बहकावे में आए कठिन दौर में भी पार्टी का साथ नहीं छोड़ा। बसपा के लोग मजबूत चट्टान की तरह पार्टी के साथ खड़े रहे हैं। उम्मीद है कि बसपा से जुड़े अन्य सभी वर्गों के लोग कभी गुमराह नहीं होंगे।

मायावती ने सत्ता में आने पर लाभ देने के लिए घोषणाओं की झड़ी लगा दी। उन्होंने कहा कि ब्राह्मण समाज को सुरक्षा और सरकार में उचित प्रतिनिधित्व दिया जाएगा। बसपा सरकार ने किसी भी विशेष जाति वर्ग पर जुलम नहीं होने दिया जाएगा। सत्ता में आने के बाद तीनों कृषि कानूनों के अमल पर रोक लगेगी। वित्त विहीन शिक्षकों के लिए आयोग बनाकर सुविधाएं देंगे। सभी संस्कृत स्कूलों को सरकारी सुविधाएं देंगे। हमारी सरकार को प्रेरणा स्थल, पार्क, मूर्तियां लगाने व संग्राहलय बनाने का जितना काम करना था कर लिया, अब स्मारक, पार्क व संग्रहालय नहीं बनवाएंगे, सत्ता में आने पर हम सब मिलकर यूपी की तस्वीर बदलेंगे। उन्होंने कहा कि प्रबुद्ध वर्ग विचार गोष्ठी के दूसरे चरण में अब विधानसभावार कार्यक्रम चलेगा। इसमें प्रत्येक विधानसभा में 1000 ब्राह्मण कार्यकर्ता तैयार किए जाएंगे। दूसरे चरण में महिला कार्यकर्ताओं को भी प्रबुद्ध वर्ग के लिए तैयार किया जाएगा। मायावती ने प्रबुद्ध वर्ग के लोगों का धन्यवाद देते हुए कहा कि इस वर्ग के लोगों पर बसपा को गर्व है। बसपा को 2007 की तरह 2022 में पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने से कोई नहीं रोक सकता। सपा व भाजपा की सरकारों में ब्राह्मणों, दलितों, गरीबों का शोषण हुआ है। भाजपा भी बसपा की नकल में प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन कर रही है।

खबर संक्षेप

महिला अपने तीन बच्चों व पति के साथ परेशान

कोराव। खीरी थाना क्षेत्र के महुली ग्राम सभा में एक दुर्गा मां की प्रतिमा बनाने वाली महिला के साथ छेड़खानी का मामला प्रकाश में शनिवार को आया है। महिला द्वारा खीरी पुलिस को शिकायती पत्र देने पर पुलिस की फटकार खानी पड़ी । जानकारी के अनुसार खीरी थाना क्षेत्र के महुली ग्राम सभा में एक महिला दुर्गा मां की मूर्ति बनाने का काम करती है। वह 3 बच्चे व पति के साथ रहती हैं। शनिवार को सुबह 10 बजे उसके घर से समीप का ही एक व्यक्ति मूर्ति देखने के बहाने घर में गया और मूर्ति देखने के दौरान महिला से छेड़खानी करने लगा ।विरोध करने पर महिला उसके हाथ में दांत काट ली। वही चिल्लाने पर महिला का पति भी आ गया। महिला ने यह भी आरोप लगाई कि छेरखानी करने वाला व्यक्ति पति को भी गला दबाते हुए मारने लगा। आरोप है कि पुनः थोड़ी देर बाद आरोपी व्यक्ति कट्टा लेकर आया और उक्त महिला और उसके पति को थाने न जाने हेतु धमकी दिया।।112नंबर की पुलिस भी मौके पर पहुंची।महिला ने अजीत उर्फ लुग्गी निवासी महुली के विरुद्ध खीरी पुलिस को तहरीर दी।

बेकाबू ट्रक ने मासूम को कुचला, मौत

आक्रोशित ग्रामीणों ने गौहनिया- करछना मार्ग पर चार घंटे तक लगाया जाम, वरिष्ठ अधिकारियों के आश्वासन पर माने लोग

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। घूरपुर क्षेत्र के हथिगन गांव के गौहनिया करछना मार्ग पर सोमवार के दिन बेकाबू ट्रक ने एक मासूम को कुचल दिया। जिससे मौके पर ही उसकी मौत हो गई। घटना के बाद नाराज ग्रामीणों ने करछना गौहनिया मार्ग जाम कर दिया। सूचना पर पहुंचे एसडीएम व सीओ की ओर से सहायता का आश्वासन दिए जाने के बाद चार घंटे बाद जाम हटाया गया। बाद में पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

हथिगन निवासी खिन्नी भारतीय का करछना गौहनिया मुख्य सड़क के बगल में घर है। सोमवार को सुबह उनका पांच वर्षीय इकलौता पुत्र निखिल घर के बाहर खड़ा था। तभी गौहनिया की ओर से करछना की तरफ जा रहा बेकाबू ट्रक निखिल को कुचलते हुए भाग निकला। मौके पर ही मासूम की मौत हो गई। मासूम के परिजन भी मौके पर पहुंचे तो कोहराम मच गया। सूचना पर पहुंची पुलिस करछना थाने को फोन कर ट्रक को हिरासत में ले लिया। मासूम की मौत से नाराज ग्रामीण उग्र हो करछना गौहनिया मार्ग जाम कर दिए। पहुंची पुलिस तो मासूम के शव को उठाने नहीं दिया। एसओ राजेश उपाध्याय लोगों को समझाने लगे। लेकिन लोग उच्च अधिकारियों को बुलाने की मांग पर अड़िंग रहे। बवाल बढ़ते देख करछना थाने की पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। मामले की जानकारी पर घटना के तीन घंटे बाद एसडीएम करछना विनोद कुमार पांडेय व सीओ करछना राजेश कुमार यादव घटनास्थल पर पहुंच काफी देर तक समझा बुझा सहायता दिलाने के आश्वासन के दिए तो ने जाम हटाया तो आवागमन शूरू हुआ। जाम खुलने के बाद पुलिस ने शव को पीएम के लिए भेजा। इस बीच चार घंटे तक आवागमन बाधित रहा। मार्ग के दोनो तरफ वाहनों की कतार लग गई। और राहगीरों को परेशानी झेलनी पड़ी। मृतक मासूम इकलौता घर का चिराग था। उसके तीन बहनें हैं। परिजनों का रोरो कर बुरा हाल हो गया है।

मासूम की मौत के बाद मार्ग जाम किए नाराज ग्रामीणों को समझाती पुलिस

ईंट भट्ठ में बेहोशी हालत में मिला किशोर, सनसनी

घूरपुर। इलाके के इरादतगंज गांव स्थित एक ईंट भट्ठे के पास मंगलवार की सुबह बेहोशी हाल में एक किशोर के मिलने से सनसनी फैल गई। ग्रामीणों ने मामले की सूचना यूपी 112 डॉयल पुलिस को सूचना दी तो मौके पर पहुंची पुलिस उसे अस्पताल में भर्ती कराया। इरादतगंज गांव के एक ईंट भट्ठे पर मंगलवार की सुबह एक किशोर उम्र लगभग 15 वर्ष का बेहोशी हाल में मिला ।किशोर के पास ही उसकी साइकिल भी पड़ी थी । बेहोश किशोर मिलने की सूचना पुलिस को दी गई । मौके पर पहुंची पुलिस उसकी पहचान करवाने की कोशिश की लेकिन पहचान नही हो पाई ।पुलिस ने बेहोश किशोर को एसआरएन में भर्ती कराया है ।किशोर की शरीर पर लोवर व नीला टीशर्ट था ।

न्यूज झरोखा

कहासुनी में दो सगे भाइयों में खूनी संघर्ष चार घायल

उतरांव। उतराव थाना क्षेत्र के दम गड़ा गांव में आपसी कहासुनी में दो सगे भाइयों में जमकर मारपीट हो गई। वही दोनों पक्षों से चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को पुलिस ने इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भिजवाया। पुलिस ने दोनों पक्षों की तहरीर पर मुकदमा पंजीकृत किया। दम गड़ा थाना उत्तराव निवासी ओम प्रकाश व जयप्रकाश दो सगे भाई हैं ।दो के घर के बच्चे सुबह मॉर्निंग वॉक करने के लिए गए थे। बच्चों में कहासुनी हुई तो बच्चो के विवाद में सगे भाई आपस में भिड़ गए ।दोनों पक्षों में जमकर लाठियां चली। वही एक पक्ष से ओम प्रकाश पुत्र बजरंगी लाल व ओमकारनाथ गंभीर रूप से घायल हो गए ।वहीं दूसरे पक्ष से जय प्रकाश पुत्र स्वर्गीय बजरंगी लाल और उसका बेटा सूरज पुत्र जयप्रकाश लहूलुहान हो गया। दोनों पक्ष थाने पर पहुंचकर लिखित तहरीर दी पुलिस ने घायलों को इलाज के लिए भिजवाया। वही दोनों पक्षों की तहरीर पर पुलिस ने मारपीट समेत अन्य संगीन धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर मामले की जांच में जुटी हुई है।

इंजी अवनीश शुक्ला को सपा लोहिया वाहिनी के वि. स. अध्यक्ष की मिली जिम्मेदारी

मेजा रोड। समाजवादी पार्टी लोहिया वाहिनी का मेजा विधानसभा अध्यक्ष की जिम्मेदारी इंजी अवनीश कुमार शुक्ला को सौंपी गई। जिससे स्थानीय सपाइयों मे खुशी का माहौल है। बता दें कि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के अनुमति, प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल की संस्तुति एवं लोहिया वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ रामकरन निर्मल के अनुमोदन पर समाजवादी पार्टी लोहिया वाहिनी के पदाधिकारियों का गठन किया गया। जिसमे मेजा विधानसभा अध्यक्ष की जिम्मेदारी विधानसभा क्षेत्र के ऊंचडीह निवासी इंजी अवनीश कुमार शुक्ला को सौंपी गई। मंगलवार को जिला अध्यक्ष योगेश चन्द्र यादव व एमएलसी मान सिंह यादव ने इंजी अवनीश कुमार शुक्ला को मनोनयन पत्र सौंपा। जिम्मेदारी पाकर अवनीश शुक्ला ने कहा कि पार्टी ने जिस भरोसे पर हमे पद की जिम्मेदारी सौंपी है, मै उस पर खरा उतरने एवं पार्टी की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने का काम करुंगा। जिससे आने वाले 2022 के विधानसभा चुनाव मे अखिलेश यादव के नेतृत्व मे समाजवादी पार्टी की सरकार बने। विधानसभा अध्यक्ष पद के मनोनयन से स्थानीय सपाइयों मे खुशी का माहौल है।

सपाईयों ने मिठाई खिलाकर दी बधाई

लालापुर। क्षेत्र के चिल्ला गौहानी निवासी बृजेश यादव सदस्य जिला पंचायत जसरा को जिला योजना समिति में सदस्य निर्विरोध चुने जाने पर क्षेत्र के लोगो व सपाईयों ने एक दूसरे का मुंह मीठा कर खुशी जाहिर किया बैठक में रामभवन,हरिकेश यादव,रामधनी पटेल, यादव ,गजराज सिंह,डॉ लालजी,तुलसी यादव,विकाश यादव,रत्नाकर सोनकर,सुकेश आदिवासी,गौरीशंकर यादव,आदि लोग मौजूद रहे।

सांसद रेवती रमण सिंह ने करछना में केयर हॉस्पीटल का किया उद्घाटन

अखंड भारत संदेश

करछना में अस्पताल का उदघाटन करते सांसद रेवती रमण सिंह

करछना। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र करछना के बगल में स्थित केयर हॉस्पिटल का प्रयागराज के राज्य सभा सांसद कुवर रेवती रमण सिंह ने फीता काट कर उद्घाटन किया ।इस मौके पर उन्होंने लोगों के बेहतर ईलाज केलिए केयर अस्पताल के निदेशक डाक्टर नजम सिद्दीकी से कहा कि क्षेत्र में इसी तरह से बेहतर सुबिधा रहित अस्पताल खुलने से यहाँ के लोगों को ईलाज में आसानी होगी । लोग बिना सुविधाओं वाले अस्पताल में अक्सर मरीजों को परेशानी होती है इस अस्पताल के खुल जाने से ख को सभी सुविधाएं मिलने से दूर शहर के लिए नहीं जाना पडेगा ।इस अवसर पर कयी गणमान्य लोग शामिल रहे जिसमें पूर्व ब्लाक प्रमुख करछना विजय राज सिंह , वर्तमान ब्लाक प्रमुख करछना सरोज द्विवेदी प्रतिनिधि कमलेश द्विवेदी, मदनमोहन द्विवेदी मीडिया प्रभारी सांसद, डाक्टर नजम सिद्दीक बब्बू गौतम, देव शंकर, रवीश चंद्र तिवारी, ओम प्रकाश सिंह , अछूतानंद दिवेदी महेंद्र द्विवेदी मनोज द्विवेदी श्रवण कुमार द्विवेदी नंदलाल दिनकर विजय कुमार दिनकर आदि उपस्थित रहे।

जागरूकता के साथ ग्रामीणों ने वैक्सीन लगवाई

सहसों। कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए सरकार द्वारा चलाए जा रहे बड़े पैमाने पर वैक्सीनेशन अभियान के तहत ग्रामीण अंचल के नागरिक भी जागरूक होकर भारी संख्या में कोविड सेंटर पर पहुंच कर बड़े उत्साह से वैक्सीन लगवाने के लिए सुबह से ही लाइन लगाकर अपनी बारी का इंतजार करते रहे। इसी क्रम में प्राथमिक विद्यालय सहसों में सुबह से ही महिला व पुरुष वैक्सीन लगवाने के लिए पहुंच। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बनी के अधीक्षक डॉ अमृत लाल यादव की देखरेख में चलाए जा रहे वैक्सीनेशन कार्यक्रम में सहसों प्राथमिक विद्यालय में कैंप लगाकर 250 लोगों को वैक्सीन लगाई गई। जिसमें वैक्सीनेशन टीम में एएनएम आभा राय, एएनएम सुमन पाल, आशा बहू बबली सिंह व आशा गुप्ता, आंगनबाड़ी कार्यकत्री सहित अन्य स्वास्थ्य कर्मचारी लगे रहे। तथा कोरोना वायरस बचाव के लिए लोगों को जागरूक भी करते रहे।

एनम के ऊपर टीका बेंचने और रिश्वत मांगने का लगा आरोप

अखण्ड भारत संदेश

सिरसा। मेजा तहसील क्षेत्र के एक एनम पर टीका बेचने एवं टीके की जगह पानी भर कर बच्चों को लगाने एवं बच्चों के जीवन के साथ खिलवाड़ करने का गंभीर आरोप लगाया है। मिली जानकारी के अनुसार उरुवा ब्लॉक के बरवा गांव के अधिवक्ता पवन शुक्ला ने आरोप लगाया है कि वह 28 अगस्त को दोपहर बारह बजे अपनी पुत्री यशस्विनी उम्र एक वर्ष छः माह को टीका लगवाने के लिए टीकाकरण केंद्र प्राथमिक पाठशाला बरवा ब्लॉक उरुवा गए। वहां पर कार्यरत एनम प्रमिला आराम कर रही थी, वह अपनी पुत्री को टीका लगवाने के लिए कहा तो रुपए की मांग करने लगी। अधिवक्ता द्वारा कहा गया कि टीका निःशुल्क लगना है, तब वह धमकी दिया कि बिना रुपए दिए टीका नही लगेगा, जो करना हो कर लो सारे अधिकारी हमारे हैं। वहीं अधिवक्ता ने बताया कि उन्हें जानकारी मिली कि एनम प्रमिला द्वारा केंद्र को रुपए वसूली का अड्डा बना लिया है। पवन शुक्ला ने एनम प्रमिला के ऊपर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि वह टीका बेचकर उसके जगह पर पानी भरकर बच्चों के जीवन के साथ खेला खेल रही है। जिससे उनके इस कारनामे व उनके टीके से क्षेत्र के कई बच्चे बीमार पड़े हुए हैं, और कुछ बच्चे मर भी गए हैं। प्रमिला धोखाधड़ी व जालसाजी कर हत्या का अपराध किया है। वहीं अधिवक्ता ने संपूर्ण समाधान दिवस मेजा मे तहरीर देकर उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई कर उन्हें सेवा से बर्खास्त करने की मांग की है।

देवरिया गांव में 15 लाख की लागत से बनेगा मॉडल खेल मैदान

70 हजार लागत की लगाई जाएगी घास, सौर उर्जा की रोशनी जगमग रहेगा खेल मैदान

अखंड भारत संदेश

मॉडल खेल मैदान को जेसीबी से सफई कराते प्रधान महंत राजीव गिरी

घूरपुर। इलाके के देवरिया गांव के ग्राम सभा में पंद्रह लाख कीमत की मॉडल खेल मैदान बनेगा। मंगलवार के दिन प्रधान राजीव गिरी महंत जेसीबी से साफ सफाई कराना शुरू कर दिया। इसे देख ग्रामीण युवाओं में खुशी की लहर दौड़ गई।

जसरा विकास खंड के देवरिया ग्राम सभा में ग्राम पंचायत की ओर से पंद्रह विस्सवा मे ग्राम सभा की जमीन में पंद्रह लाख लागत की आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण मॉडल खेल मैदान बनाया जाएगा। जिसका कार्य मंगलवार के दिन प्रधान महंत राजीव गिरी ने मॉडल खेल मैदान की जेसीबी से साफ सफाई का कार्य शुरू कर दिया है। इस मॉडल खेल मैदान में बालीबाल, टेनिस, बैडमिंटन, जिम आदि खेलों की सुविधाएं रहेगी।70 हजार लागत की खेल मैदान में घास लगाई जायेगी। और शुद्ध पेयजल के लिए आरओ की भी सुविधा रहेगी। साथ ही सौर उर्जा से आकर्षक बिजली से रोशनी से लैस किया जाएगा। बैठने के लिए कुर्सी आदि की व्यवस्था रहेगी। इस मॉडल खेल मैदान होने से गांवों में खेल प्रतिभाओं को खेलने का मौका मिलेगा। और ग्रामीण विद्यार्थियों व युवाओं की खेलों की प्रति रूचि बढ़ेगी। ग्रामीणों ने बताया कि ये संभव प्रधान महंत राजीव गिरी के अथक प्रयास से संभव हो सका है। मॉडल खेल मैदान में साफ सफाई होते देख ग्रामीण युवाओं मे खुशी की लहर दौड़ गई।

पैसे की लेनदेन के विवाद में शिक्षक को पीटा, घायल

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के छिवकी रेलवे स्टेशन के समीप पैसे की लेनदेन के विवाद में एक प्राइवेट शिक्षक का की जमकर पिटाई कर दी गई। जिससे उसका सिर फट गया और वह घायल हो गया। आरोपी के खिलाफ भुक्तभोगी ने रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए पुलिस को तहरीर दी है। जानकारी के मुताबिक प्रतापगढ़ जिले स्थित कुंडा निवासी उमेश पांडेय (35) नैनी कोतवाली क्षेत्र के दूरवाणी नगर में कमरा किराए पर लेकर रहते हैं। वह प्राइवेट शिक्षक हैं। उसने एक युवक को बीते कुछ माह पूर्व चार हजार पांच सौ रुपए उधार दिए थे। मंगलवार शाम को उमेश पांडेय उक्त युवक के बुलाने पर छिवकी रेलवे स्टेशन के निकट सरकारी शराब की दुकान के समीप पहुंचे तो दोनों के बीच पैसे की लेनदेन में जमकर कहासुनी हो गई। बात आगे बढ़ी तो आरोपी युवक ने उसकी जमकर पिटाई कर दी। जिससे उसका सिर फट गया और वह घायल हो गया।

अस्पताल में गलत इलाज से नवजात शिशु की मौत का आरोप, शिकायत

नवजात शिशु की मौत के बाद भी रुपए वसूले जाने का भी आरोप

अखंड भारत संदेश

नवजात शिशु की मौत के बाद पीड़ित पक्ष थाने पहुंच पुलिस से शिकायत करते हुए

घूरपुर। इलाके के एक अस्पताल में गलत इलाज से नवजात शिशु की मौत होने व मौत के बाद भी रुपए वसूले जाने का आरोप लगाते हुए पीड़ित पक्ष के दर्जनों लोगों ने थाने पहुंच संबधित अस्पताल के चिकित्सक के खिलाफ शिकायती पत्र देकर कार्रवाई की मांग की गई। बीकर गांव निवासी कृष्ण चंद्र पटेल की पत्नी का प्रसव सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जसरा मे सोमवार के दिन कराया। कुछ ही देर बाद नवजात शिशु की हालत खराब हुई तो गौहनिया स्थित सहारा अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया। आरोप है कि गलत इलाज की वजह से मंगलवार के सुबह शिशु की मौत हो गई। मौत के वावजूद भी रुपए वसूले जाने लगे। विरोध पर अस्पताल के चिकित्सक ने गाली गालौज करने लगे। जिससे दोनो पक्षों में नोकझोक हो गई। पीड़ित पक्ष दर्जनों की संख्या में थाने पहुंच नामजद शिकायती पत्र देकर कार्रवाई की मांग की। पुलिस मामले की जांच पड़ताल कर रही है। इस मामले में सबंधित चिकित्सक जय शंकर सिंह ने मामले में कहा कि नवजात शिशु की हालत नाजुक थी और इलाज के दौरान मौत हो गई। गलत इलाज और मरने के बाद रूपए वसूलने का आरोप गलत है। ऐसा कुछ भी नहीं किया गया।

कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक पसना कोरांव के दुर्दिन

अखंड भारत संदेश

मान्यता नवीनीकरण के अभाव में बालिका गृह का संचालन बन्द कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित कोल बालिका आश्रम के दुर्दिन

कोरांव। तहसील अंतर्गत ग्राम पसना में कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित कस्तूरबा कोल बालिका आश्रम /बालिका गृह का संचालन जिला प्रोबेशन अधिकारी के लिखित आदेश से बंद कर दिया गया है। ज्ञातव्य हो कि निदेशक महिला कल्याण लखनऊ के द्वारा संस्था को फरवरी 2014 में 0 से 18 आयु वर्ग बालिकाओं हेतु आश्रम संचालन हेतु मान्यता निर्गत की गयी थी।,जिसकी वैधताअवधि फरवरी 2019 तक थी। वैधता समाप्ति के बाद मान्यता का नवीनीकरण नही कराया गया। समय-समय पर शासन द्वारा जांच में भी विभाग द्वारा तय किशोर न्याय योजना के नियमों एव प्रावधानों का पालन न होना व संस्था का भवन जर्जर पाया गया। इसी के क्रम में जिला प्रोबेशन अधिकारी प्रयागराज द्वारा बालिका आश्रम का संचालन बन्द करते हुए उपजिलाधिकारी कोरांव को निर्देशित किया गया कि स्थानीय स्तर पर बालिका गृह का संचालन बन्द करवाएं। जिससे कोल समुदाय एवम उक्त ट्रस्ट से जुड़े लोगों में असंतोष व्याप्त है।

कुपोषण दूर करने के लिए करना होगा सामूहिक प्रयास : राजमणि

कोरांव। मंगलवार को राष्ट्रीय पोषण माह कार्यक्रम के तहत बाल विकास परियोजना कार्यालय पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बतौर मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक राजमणि कोल मौजूद रहे। विधायक ने संबोधित करते हुए कहा कि कुपोषण को दूर भगाने के लिए हम सभी को सामूहिक प्रयास करना होगा तभी जाकर समाज से इसे दूर किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि कुपोषण के चलते आज भी हमारे देश में तमाम लोग असमय काल के गाल में समा जाते हैं ।पौष्टिक आहार के महत्व को बताते हुए विधायक ने कहा कि आहार में विविधता एवं पौष्टिकता को बढ़ाना बेहद जरूरी है । कार्यक्रम की जानकारी देते हुए प्रधान लिपिक अनिल कुमार ने बताया कि राष्ट्रीय पोषण माह के तहत महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा गर्भवती एवं स्तनपान कराने वाली माताओं को भोजन को सही तरीके से पकाने एवं खाने के बारे में विस्तार से जानकारी दी जा रही है। इसके अलावा आंगनबाड़ी कार्यकताओं को पोषण किट दिया जा रहा है। इस दौरान प्रमुख रूप से विभाग की सुपरवाइजर सरोज कुमारी, जनक दुलारी, करुणा सिंह ,प्रभा सिंह के अलावा विधायक पीआरओ रामाश्रय शुक्ला सहित कई अन्य लोग मौजूद रहे।

भू माफिया सक्रीय,प्रधान द्वारा की जा रही कार्यवाही से हड़कंप

अखंड भारत संदेश

गरीबों के हितार्थ और गांव के समग्र विकास में लगे ग्राम प्रधान को डिस्टर्ब करने पर अराजक तत्व जुटे, ग्राम प्रधान ने मुख्य सचिव उत्तर प्रदेस को किया सूचित, प्रधान को कुछ लोग दे रहे थे तरह तरह की धमकियां,थाना प्रभारी को कार्यवाही का निर्देश

पसना कोरांव। ग्राम पंचायत अल्हवा कोरांव द्वारा गांव के समग्र विकास एवम जनकल्याण हेतु तथा भूमिहीनों गरीबों को अतिक्रमित गांव समाज की जमीनें पट्टा किए जाने की प्रस्तावित कार्यवाही से प्रधान के विपक्षी बौखला उठे हैं,और प्रधान को दबाने के लिए तरह तरह के कुप्रयास तथा हत्या के साजिश रचे जाने का प्रयास रचा जा रहा है। जिसकी सूचना ग्राम प्रधान अल्हवा ने सीधे मुख्य सचिव यूपी को पत्र लिखकर दे दी।

उल्लेखनीय है कि ग्राम पंचायत अल्हवा निर्वाचित ग्राम प्रधान तथा सोशल एक्टिविस्ट मिस्किन सेवा संस्थान ट्रस्ट के संस्थापक प्रबन्धक व वरिष्ठ पत्रकार अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे ने गांव की कई साल से गैर कानूनी तरीके से अतिक्रमित ग्राम समाज की जमीनों को जिलाधिकारी के यहां आवेदन दे कर अवैध कब्जे खाली कराने का आदेश कराया है। जिससे गरीबों को पट्टा मिल सके,तथा गांव की कब्जे की गई मार्ग,चक रोड आदि की जमीनों पर मनरेगा द्वारा मार्गों का जाल बिछाया जा सके। जिससे नाराज भू माफिया अतिचारी लामबंद होकर गांव में शांति व्यवस्था भंग करना चाहते हैं। और विपक्षी प्रधान को प्रेषण करने के उद्देस्य से फर्जी आवेदन डाल कर हौंसले परस्त करना चाहते हैं। बता दें कि प्रधान और लेखपाल ने ग्राम समाज की अतिक्रमित जमीनों को जोतने बोने के पूर्व ही लोगों को मना कर दिया गया था। साथ ही दुग्गी भी पिटवाई गई थी। और उप जिलाधिकारी कोराव ने ग्राम सभा के एक कार्यक्रम में उक्त जमीनें खाली करने की चेतावनी भी प्रधान के मांग पत्र पर दी थी। इसके बावजूद कुछ लोगों ने अनदेखी कर ग्राम समाज की जमीनों पर अविध कब्जा कर लिया। ग्राम सभा के कोटेदार लाल बहादुर द्वारा भी जबरन कब्जा कर अन्य लोगों को उकसाया की प्रधान लेखपाल क्या उखाड़ लेंगे। जिसकी शिकायत प्रधान लेखपाल ने थाना दिवस पर की। और राजस्व टीम ने पुलिस बल के साथ कोटेदार द्वारा जबरन बोई गई फसल को नस्ट करवाया। जिससे खुन्नस खा कर कोटेदार गांव में सारे अतिक्रमण कताओं को एक जुट करवा कर हमले की तैयारी कर वा रहा है और प्रधान की हत्या और फर्जी केसों में फंसाने की साजिश रच रहा। जिससे इलाके के भू माफिया,अराजक तत्व, खनन माफिया लामबंद हो रहे हैं। उधर प्रधान ने ग्राम के विकास के लिए अपनी रफ्तार और तेज करदी। जिससे गरीब लोगों का झुंड प्रधान के साथ उठ खड़ा है। ग्राम प्रधान द्वारा पक्की रोड के किनारे भूखंड संख्या ७५५ करीब डेढ़ बीघा भूमि पर मनरेगा योजना से एक ग्राम मजदूर वाटिका का निर्माण कार्य प्रस्तावित कर दिया। और खंड विकास अधिकारी तथा मुख्य विकास अधिकारी प्रयागराज को उक्त पार्क बनवाने में ग्राम समाज की जमीन पर कब्जा करने वालों से भूमि खाली कराने की मांग करदी। जिस पर मुख्य विकास अधिकारी ने उप जिलाधिकारी को भूखंड खाली कराने का निर्देश दिया।

फिलहाल ग्राम प्रधान ने बताया कि मौत ऊपर वाले के हांथ में है मैं जब तक जीवित रहूंगा ग्राम के विकास उज्ज्वल भविष्य एवम गरीब किसान मजदूर के कल्याणार्थ कार्य करता रहूंगा।

खबर संक्षेप

करछना तहसील में शहीद नायक संतोष तिवारी के नाम पर बनेगा पार्क

करछना। जमुनापार की प्रमुख एवम प्राचीन तहसील करछना के बगरहा डीहा गांव के शहीद नायक संतोष तिवारी के नाम से तहसील परिसर ग्राउन्ड में एक पार्क का निर्माण कार्य जल्द शुरू किया जायेगा, जिसमें तहसील में आने वाले फरियादियो को बैठने का एक मुख्य स्थान भी होगा,

इस बावत ब्लाक प्रमुख करछना सरोज द्विवेदी के प्रतिनिधि पति कमलेश द्विवेदी ने एसडीएम करछना विनोद कुमार पाण्डेय से हुई बातचीत के दौरान पत्रकार वार्ता के दौरान प्रमुख प्रतिनिधि कमलेश द्विवेदी ने कहा, शहीद संतोष तिवारी सन् 2003 में जम्मू कश्मीर के कुपवाड़ा में लडाई के दौरान शहीद हो गये थे, तब से अबतक कयी सरकार आयी और गयी लेकिन नायक शहीद संतोष तिवारी के नाम से तहसील क्षेत्र में कोई पहचान की तवज्जों नहीं मिल पाया है, इस बात की जानकारी प्रमुख प्रतिनिधि कमलेश द्विवेदी ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर एसडीएम करछना को बताया कि नायक शहीद संतोष तिवारी के नाम से तहसील परिसर ग्राउन्ड में एक शहीद के नाम से पार्क बनाया जायेगा और उस पार्क में दूर दराज से आने वाले फरियादियो को बैठने आदि की सुविधा आशान होगी और जो शहीद के नाम से जाना जाता रहेगा ।

मण्डलायुक्त एवं डीएम ने स्वरूपरानी अस्पताल का किया निरीक्षण

स्वरूपरानी अस्पताल में बच्चों के उपचार के लिए अलग से 100 बेड के बनाये गये पीड्रियाट्रिक वार्ड का फीता काटकर किया शुभारम्भ

अखंड भारत संदेश

स्वरूपरानी अस्पताल के निरीक्षण में अधिकारियों को निर्देशित करते मंडलायुक्त

प्रयागराज। मण्डलायुक्त संजय गोयल एवं जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री मंगलवार को स्वरूपरानी अस्पताल का निरीक्षण किया। मण्डलायुक्त ने बच्चों के बेहतर उपचार के लिए स्वरूपरानी अस्पताल में अलग से बनाये गये 100 बेड के पीड्रियाट्रिक वार्ड का फीता काटकर शुभारम्भ किया। मण्डलायुक्त एवं जिलाधिकारी ने अस्पताल में भर्ती मरीजों से बातचीत करते हुए दवाओं की उपलब्धता सहित अन्य आवश्यक चीजों के बारे में जानकारी ली। उन्होंने वहां पर उपस्थित चिकित्सकों से कहा कि मरीजों को किसी भी प्रकार की समस्या न होने पाये। उन्होंने आवश्यकता पड़ने पर और वार्डों को भी बच्चों के इलाज के लिए उपयोग लाये जाने के लिए पूरी तैयारी रखने के निर्देश दिये है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में कोरोना का कोई केस नहीं है, केवल वायरल फीवर से ही सम्बंधित मरीज है। स्वरूपरानी की तरह ही शहर के अन्य अस्पतालों में भी इसकी व्यवस्था की गयी है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में भी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र/प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर भी व्यवस्था करायी गयी है। दवाओं की कोई कमी है। जिलाधिकारी के द्वारा निरंतर इसकी मानीटरिंग की जा रही है तथा चिकित्सकों को भी निर्देशित किया गया है कि किसी प्रकार की लापरवाही या शिथिलता न बरती जाये। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ0 एस0पी0 सिंह सहित अन्य चिकित्सकगण उपस्थित रहे।

फार्च्यूनर की टक्कर से बाइक सवार की मौत, साथी की हालत नाजुक

प्रयागराज। झूंसी में पंत संस्थान के पास तेज रफ्तार फार्च्यूनर की टक्कर से एनसीसी में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी रामसजीवन यादव की मौत हो गई। उनके साथ पीछे बैठे सेना के हवलदार अमरेंद्र पांडेय गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। रामसजीवन एनसीसी में कर्मचारी थे। वह कहीं जाने के लिए बाइक से निकले थे। उनके साथ सेना में हवलदार अमरेंद्र पांडेय भी सवार थे। तेज रफ्तार फार्च्यूनर की टक्कर से दोनों छिटककर दूर जा गिरे। रामसजीवन की घटना स्थल पर ही मौत हो गई। सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में ले लिया। घायल हवलदार को अस्पताल भेजा गया है। पुलिस ने फार्च्यूनर चालक मोहम्मद उमर को गिरफ्तार कर लिया और गाड़ी कब्जे में ले ली है।

प्रमोद यादव बने भाजपा प्रतापपुर विधानसभा संयोजक

फूलपुर। भारतीय जनता पार्टी के तेजतर्रार नेता भोगवारा ग्रामसभा निवासी प्रमोद कुमार यादव को प्रतापपुर विधानसभा का आईटी सेल संयोजक बनाया गया है। उनके नाम की घोषणा की सूचना मिलते क्षेत्र में खुशी की लहर दौड़ गई। मंडल अध्यक्ष आशुतोष त्रिपाठी, कमला पांडेय, महावीर मिश्रा, रुद्र प्रताप सिंह, सत्यकान्त शुक्ला, धर्मकांत शुक्ला, समरजीत मौर्या, दीपक केशरवानी, उदयवीर प्रजापति, कमल मौर्या, शिवाकांत शुक्ला, राहुल यादव, राकेश के साथ ही अन्य भाजपा नेताओं ने उन्हें शुभकामनाएं दी।

कांग्रेस ही चला सकती है देश : अशफाक अहमद

गांव में जनता से संवाद स्थापित कर उन्हें कांग्रेस की नीतियों से अवगत कराते हुए कांग्रेसी

अखंड भारत संदेश

फूलपुर। गांव में जनता से संवाद स्थापित कर उनकी समस्याओं का समाधान करने का अभियान चला रहे कांग्रेसी मंगलवार को बगई खुर्द गांव पहुंचे तो ग्रामीणों उनकी खूब सराहना की। कांग्रेस पार्टी के पूर्व जिला उपाध्यक्ष अशफाक अहमद के नेतृत्व में पार्टी के कार्यकताओं का जत्था मंगलवार को अभियान के दूसरे दिन गांवों में पहुंचा तो ग्रामीणों ने उन्हें अपनी समस्यों से अवगत कराया जिसपर कार्यकताओं ने अविलंब समस्या के निराकरण का आश्वासन दिया। कांग्रेसियों के सामने ग्रामीणों ने जहां बढ़ती मंहगाई का रोना रोया वहीं महिलाएं घरेलू गैस के दामों में अप्रत्याशित बढ़ोतरी पर नाराजगी जताई। जिसपर पूर्व जिला उपाध्यक्ष अशफाक अहमद ने कांग्रेस सरकार की नितियों से ग्रामीणों को अवगत कराते हुए कहा कि हर जन का कल्याण सिर्फ कांग्रेस की सरकार में ही है। वहीं देश भी चला सकती है। किसान से जुड़ी समस्या हो या फिर रोजगार व महिला सशक्तिकरण की कांग्रेस ने सबपर उत्कृष्ट कार्य कर देश को एक गति देने काम किया है। उन्होंने आगामी चुनावों में कांग्रेस की सरकार बनाने की अपील की। वहीं एडवोकेट देवराज उपाध्याय ने कहा कि कांगेसी जनता के हितों के लिए सदैव तत्पर रहा करते हैं। मौके पर तहजीब उल हसन, सलीम टाइगर ,गिरधारी लाल सरोज, शादाब अहमद ,मोहम्मद फैज आलम हाशमी ,मोहम्मद इरशाद, रंजीत यादव समर बहादुर यादव, शमशेर बहादुर पटेल सहित अन्य कांग्रेसी नेता मौजूद रहे।

पेड़ की डाल से झूलती मिली युवक की लाश

लाश का पोस्टमार्टम कराए बिना पुलिस ने मान लिया आत्महत्या जबकि युवक की लाश अपने पीछे छोड़ रही कई अहम सवाल

अखंड भारत संदेश

घटनास्थल पर युवक की लाश देखने पहुंची महिलाएं की भीड़

प्रयागराज। पूरामुफ्ती थाना क्षेत्र के हैदरगंज निवासी उमेश कुमार पुत्र चंद्रपाल की लाश संदिग्ध परिस्थितियों में गांव से एक किलो मीटर दूर जंगल की तरफ महुआ की डाल से झूलती हुई मिली है। चरवाहों ने जब युवक की लाश महुआ के पेड़ से झूलते हुए देखा तो सन्न रह गए और इसकी जानकारी युवक के परिजनों को दी। परिजनों के कानों तक यह खबर जैसे ही पहुंची पुलिस को सूचना देकर दहाड़े मारकर रोते - बिलखते हुए घटनास्थल पर परिजन जा पहुंचे। घटनास्थल पर स्थानीय पुलिस पहुंचकर युवक की लाश पेड़ से नीचे उतारवाकर पंचनामा भरकर युवक की लाश परिजनों को सौंप दी। युवक की मौत को बिना गहन जांच के स्थानीय पुलिस के द्वारा आत्महत्या करार देना यह बात क्षेत्रीय लोगों को हजम नही हो रही है। मृतक युवक के परिजनों के मुताबिक युवक अर्धविक्षिप्त है और वह पेड़ पर चढ़ना नहीं जानता है। जब युवक पेड़ पर चढ़ना नहीं जानता तो उसने पेड़ पर चढ़कर कैसे आत्महत्या किया है और पुलिस ने बिना पोस्टमार्टम रिपोर्ट के कैसे युवक की मौत की कहानी पर बयान करना शुरू कर दिया है कहीं युवक की मौत के पीछे थाना पुलिस की साजिश तो नहीं है यह जांच का विषय है।

कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी को कोर्ट से झटका, बैंक कर्मचारी को धमकाने का मुकदमा नहीं होगा वापस

प्रयागराज। बैंक के कर्मचारी को धमकाने और जान से मारने की धमकी देने के मामले में कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी के ऊपर सिविल लाइंस थाने में दर्ज मुकदमा वापस नहीं होगा। शासकीय अधिवक्ता की ओर से दायर अर्जी एमपीएमएलए कोर्ट ने खारिज कर दी। 22 सितंबर 2012 को सिविल लाइंस केनरा बैंक के शाखा प्रबंधक संजीव राय ने रिपोर्ट दर्ज कैबिनेट मंत्री नंदगोपाल गुप्ता नंदी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई थी। आरोप लगाया था कि नंद गोपाल गुप्ता नंदी जो कि नंदी राम राइस मिल के प्रोपराइटर हैं। एनपीए घोषित किए गए लोन अकाउंट में पैसा ट्रांसफर करने के लिए नंदी दबाव बना रहे थे। जितना पैसा बैंक में आरटीजीएस के माध्यम से आई थी उसे उनके अकाउंट में समायोजित कर दिया गया था, लेकिन मंत्री पूरा पैसा देने का दबाव बना रहे थे और कुछ लोगों के साथ आकर बैंक मैनेजर और अन्य कर्मचारियों को धमकाया और जेल भेजने की भी धमकी दी। आरोप है कि 24 सितंबर को शाखा प्रबंधक को जान से मारने की धमकी दी और गालियां दी। मामले में विवेचना के बाद आरोप पत्र न्यायालय में प्रस्तुत किया गया था। शासन के निर्देश पर अभियोजन पक्ष से जिला शासकीय अधिवक्ता गुलाबचंद्र अग्रहरि ने छह दिसंबर 2018 को वाद वापसी की अर्जी न्यायालय में दी थी। कोर्ट ने कहा कि पीड़ित पक्षकार एक प्राइवेट व्यक्ति है। आरोप पत्र में लगाए गए आरोप में सात वर्ष तक की सजा हो सकती है। अभियोजन के प्रार्थना पत्र को निरस्त कर दिया और मामले में आरोप तय करने के लिए 21 सितंबर को नंदी को व्यक्तिगत रूप से अदालत में उपस्थित होने का भी आदेश जारी किया है।

कार्यालय ग्राम पंचायत बलीपुर वि. ख. सहसों, प्रयागराज
अल्पकालीन निविदा

वित्तीय वर्ष 2021–22 में मनरेगा/राज्य वित्त/15वां वित्त योजना के अन्तर्गत ग्राम पंचायत बलीपुर में कराये जाने वाले कार्यों के लिए कार्यस्थल पर इच्छुक फर्म/आपूर्तिकर्ता दिनांक 08.09.2021 से दिनांक 14.09.2021 तक कार्यालय ग्राम पंचायत से कार्य दिवस में 4 बजे तक शील बन्द लिफाफे में निविदा जमा कर सकते हैं, जो दिनांक 15.09.2021 को निविदा हेतु गठित निर्माण कार्य के समिति के सदस्यों के समक्ष सायं 4 बजे खोला जायेगा। सामग्री का विवरण निम्न प्रकार है:–

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत	माप
1.	हैण्डपम्प रीबोर	34000 प्रति नग	1 नग
2.	प्रा0 वि0 बलीपुर बाउण्ड्री उच्चीकरण	150000	–
3.	पंचायत भवन मरम्मत एवं टाईल्स	400000	–
4.	बाउण्ड्रीवाल निर्माण एवं पंचायत भवन	200000	–
5.	सिर किन्डिया में पुलिया निर्माण	250000	–
6.	लल्लन के घर के सामने पुलिया	100000	–
7.	इण्टरलांकिग पक्की सड़क से अन्तू के घर तक	250000	–
8.	गुरूप्रसाद के घर के पास नाली निर्माण	200000	–
9.	हैण्डपम्प मरम्मत	50000	–

नियम शर्तें:– 1. सामग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत के आदेशानुसार आधारित समय के अन्तर्गत आपूर्ति अनिवार्य होगी। 2. सामग्री दर लोक निर्माण विभाग से अधिक नही होगा। 3. सामग्री की गुणवत्ता मानक के अनुरूप न होने पर भुगतान की धनराशि से नियमानुसार कटौती कर ली जायेगी। 4. निविदा बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत अद्योहस्ताक्षरी का होगा। 5. अधिक जानकारी हेतु प्रधान/ग्राम विकास अधिकारी से सम्पर्क कर सकते हैं।

समशेर बहादुर
(ग्राम प्रधान)
ग्राम पंचायत बलीपुर
वि. ख. सहसों, प्रयागराज

पत्रांक:मेमो/राज्य वित्त के. वि./टेन्डर/2021–22/ दिनांक 07.09.2021

हेमन्त सिंह
ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत बलीपुर
सहसों, प्रयागराज।

पौधरोपण करते अधिकारी व आंगनवाड़ी सेविकाएं

आंगनवाड़ी महिलाओं ने करछना ब्लाक परिसर में चलाया पौधरोपण कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

करछना। विकास खंड परिसर में मंगलवार को आँगनबाड़ी की बड़ी संख्या में महिलाओं ने ब्लाक मुख्यालय परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि करछना कमलेश द्विवेदी, सीडीपीओ आनंद सिंह एडीओ पंचायत विवेक कुमार मिश्रा, एडीओ आई एस बी रामेश्वर सिंह, अल्प नारायण सिंह अध्यक्ष उत्तर प्रदेश लेखा एवं लेखा परीक्षा सेवा एसोसिएशन जनपद ईकाई प्रयागराज, मनरेगा प्रभारी मनीष शुक्ला, हिमांशु कुमार सिंह, महेन्द्र कुमार यादव अध्यक्ष रोजगार सेवक संघ करछना, डाक्टर दिनेश कुमार सोनी, अर्चना, सुषमा सिंह, शशी, प्रभा, मीना, कल्पना, आरती, उपमा, शकीला बनों, आशा सोनी, आशा, सुनीता, मंजू देवी, राकेश कुमार पटेल, पवनेश सोनी, जितेन्द्र कुमार सिंह आदि बड़ी संख्या में आंगनवाड़ी कार्यकत्री महिलाएं मौजूद रहीं ।

एस. आर. सिंह आर. बी. सिंह महाविद्यालय मोतिहां, हण्डिया, प्रयागराज

आवश्यता है

बी. एड.–संकाय हेतु – विभागाध्यक्ष–01 पद
- सहायक आचार्य – वनस्पति/जन्तु विज्ञान– 01 पद
- सहायक आचार्य – मनोविज्ञान– 01 पद
- सहायक आचार्य – (भूगोल/इतिहास) 01 पद
- सहायक आचार्य – (आधारिक विषय शिक्षाशास्त्र) 01 पद

परस्नातक कला कक्षाओं हेतु – सहायक आचार्य-हिन्दी – 01 पद
- सहायक आचार्य – संस्कृत– 01 पद
- सहायक आचार्य – समाजशास्त्र – 01 पद
- सहायक आचार्य – प्रा.भा.इतिहास – 02 पद

स्नातक कला संकाय हेतु – सहायक आचार्य-हिन्दी साहित्य – 01 पद
- सहायक आचार्य – गृहविज्ञान– 01 पद
- सहायक आचार्य – समाजशास्त्र – 01 पद
- सहायक आचार्य – शिक्षाशास्त्र– 01 पद

स्नातक विज्ञान संकाय हेतु – सहायक आचार्य-गणित – 01 पद
- सहायक आचार्य – भौतिक विज्ञान– 01 पद
- सहायक आचार्य – रसायन विज्ञान – 01 पद
- सहायक आचार्य – वनस्पति विज्ञा– 01 पद

वाणिज्य संकाय हेतु – सहायक आचार्य– 02 पद

योग्यता एवं वेतन एन.सी.टी.ई./राज्य सरकार/विश्वविद्यालय के मानका अनुसार आवेदन की अंतिम तिथि विज्ञापन के 15 दिन के अन्दर ।

मो.: 8853264243

प्रबन्धक
राम बहादुर सिंह

मां शिवकुमारी शुक्ला इंटर कालेज में किया गया शिक्षक दिवस का आयोजन

देश की दिशा और दशा तय करने मे शिक्षकों की होती है महत्वपूर्ण भूमिका : सुरेंद्र चौधरी

लालापुर। भारत में शिक्षक दिवस का आयोजन हर साल 5 सितंबर को किया जाता है। जो कि हमारे भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म दिवस भी है, और वह स्वयं एक शिक्षक थे तथा शिक्षा के लिए समर्पित थे, इसलिए उनकी स्मृति में इस दिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसी क्रम में लालापुर के मां शिवकुमारी इंटर कालेज में सोमवार को शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया। बता दें कि उक्त आयोजन के बतौर मुख्य अतिथि के रूप मे एमएलसी सुरेंद्र चौधरी रहे। विद्यालय के प्रबंधक विवेक शुक्ला (लाला) ने एमएलसी सुरेंद्र चौधरी को माला पहनाकर उनका स्वागत किया। शिक्षकों और छात्रों के बीच मुख्य अतिथि एमएलसी सुरेंद्र चौधरी ने अपने सम्बोधन मे गुरु और शिष्य के संबंधों को बताते हुए कहा कि शिक्षकों को चाहिए कि वह छात्रों को अपने बच्चों की तरह ही पढ़ाएं। देश की दिशा और दशा तय करने मे शिक्षकों की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आगे श्री चौधरी ने कहा कि छात्रों को भी चाहिए कि वे अपने शिक्षकों का सम्मान करते हुए शिक्षा ग्रहण करें। एमएलसी सुरेंद्र चौधरी के बाद विद्यालय के प्रबंधक लाला शुक्ला ने अपने सम्बोधन मे कहा कि हर बच्चे की जिंदगी में शिक्षक का होना बेहद ही आवश्यक है। एक बच्चा अपना बचपन कहीं ना कहीं पूरी तरह अपने माता पिता के अलावा अपने शिक्षकों के साथ ही व्यतीत करता है जिसके कारण एक बच्चे के जीवन को सही आकार देने में माता पिता के अलावा एक शिक्षक का भी बहुत बड़ा हाथ होता है तब हमें इस बात का एहसास होता है। और दोनों ही शिक्षक हमें जीवन भर याद रहते हैं एक शिक्षक सिर्फ हमें हमारी पढाई का ज्ञान ही नहीं बल्कि जिंदगी में काम आने वाली शिक्षा भी भरपूर देते हैं। सही वक्त पर हमें समझा कर हमें गलत करने से रोकते हैं। एक शिक्षक बच्चे के पूरे व्यक्तित्व को सुधारते हैं।

कार्यालय ग्राम पंचायत बेंदो करछना प्रयागराज
टेण्डर/कोटेशन

मनरेगा/चतुर्थ राज्य वित्त/14वां/15वां वित्त योजनाअन्तर्गत ग्राम पंचायत बेंदो विकास खण्ड करछना में अद्योलिखित कार्यो के आगणन /प्राकलन के अनुसार यथा आवश्यक मात्रा में सामग्री कार्य स्थल पर आपूर्ति भाड़ा सहित पहुंचाकर आपूर्ति हेतु आपूर्तिकर्ता से सील बन्द लिफाफे में टेन्डर/कोटेशन अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 07–08–2021 से दिनांक 23–08–2021 को अपराह्न 3 बजे तक आमंत्रित किया जाता है। उक्त तिथि के बाद प्राप्त किसी भी टेन्डर/कोटेशन पर विचार नहीं किया जायेगा आपूर्तिकर्ता अपना कोटेशन/टेन्डर उक्त तिथि तक जमा कर सकते हैं नियम व शर्तें किसी भी समय कार्यालय कार्यदिवस में देखी जा सकती है तथा टेन्डर फार्म की बिक्री उक्त अवधि में कार्यालय समय 10 से 12 बजे तक प्रत्येक कार्यदिवस पर की जायेगी। किसी एक व समस्त टेन्डर/कोटेशन को निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत बेंदो में निहित होगा। टेन्डर/कोटेशन दिनांक 25–08–2021 को अपराह्न 4 बजे पूर्व निर्धारित कमेटी के समक्ष खोला जायेगा। टेन्डर/कोटेशन फार्म कार्यालय में ग्राम पंचायत विकास अधिकारी के पास दिनांक 25–08–2021 कार्यालय अवधि में समय 3.30 अपराह्न तक जमा किया जा सकता है। निम्नलिखित कार्य पर पर जिस–जिस सामग्री की आवश्यकता है उसका विवरण कार्यलय/नोटिस बोर्ड पर चस्पा है उत्तर प्रदेश माल एवं सेवाकर अधिनियम के अन्तर्गत अनुमन्य जी.एस.टी. का भुगतान किया जायेगा। जिसके जमा करने का दायित्व आपूर्तिकर्ता का होगा साथ ही जी. एस.टी जमा चालान की आपूर्तिकर्ता द्वारा स्वप्रमाणित प्रति भुगतान के एक माह के अन्दर अपरिहार्य रूप से जमा करना होगा उसके उपरान्त ही अगला भुगतान किया जायेगा उस भुगतान पर ही उक्त नियम व शर्तें लागू रहेगी। इसके विपरीत स्थिति पाने पर भविष्य के उक्त फर्म को काली सूची में डालने हेतु यथोचित विधिक कार्यवाही कर दी जायेगी।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में) सामग्री अंश	सामग्री अंश आपूर्ति की अवधि
1.	पक्की सड़क से रामू के घर तक इंटरलाकिंग	(2.50)	3 माह
2.	पक्की सड़क से परमानन्द के घर तक इंटरलाकिंग कार्य	(2.25)	3 माह
3.	प्रजापति बस्ती से जटाशंकर के घर तक इंटरलाकिंग कार्य	(2.50)	3 माह
4.	जटाशंकर के घर से गुलाब के घर तक इंटरलाकिंग कार्य।	(2.50)	3 माह
5.	लालता के घर से नाला तक इंटरलाकिंग, नाली, खडन्जा कार्य	(6.00)	3 माह
6.	अमर सिंह के घर से सड़क तक इंटरलाकिंग, व नाली कार्य	(3.00)	3 माह

पत्रांकः मेमो/ग्राम पंचायत सचिव/टेण्डर/कोटेशन/2020–21/दिनांक

ग्राम पंचायत विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत बेंदो
करछना प्रयागराज।

बच्चा बदलने का विवादः डीएनए टेस्ट के लिये भेजा गया सैम्पल

सीओ के पहुंचने पर शांत हुआ मामला

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मेडिकल कालेज से सम्बद्ध जिला महिला अस्पताल में बच्चा बदलने को लेकर सोमवार की रात से ही जमकर बवाल हो रहा था जिसके कारण पुलिस बुलानी पड़ी थी। बता दें कि दो महिलाओं ने अलग-अलग बच्चों को जन्म दिया था, लेकिन बच्चा बदल जाने का आरोप एक दूसरे पर लोग लगा रहे थे। इसको लेकर दोनों पक्ष ने हंगामा किया था। मंगलवार को भी जब यह विवाद नहीं सुलझा तो दोनों बच्चों व उनकी माओं का डीएनए टेस्ट के लिये भेज दिया गया है। इसे टेस्ट के बाद ही यह निश्चय होगा कि कौन सा बच्चा किस मां का है। बता दें कि नगर कोतवाली के मोहनगंज निवासी पूजा श्रीवास्तव पत्नी विकास को सोमवार को प्रसव पीड़ा होने पर परिजनों ने जिला महिला अस्पताल में भर्ती किया था। पूजा का आपरेशन से बच्चा हुआ। इसी बीच अंतू के

सुकनापुर निवासी रेखा तिवारी पत्नी प्रीतम तिवारी अस्पताल पहुंची। इनका भी बच्चा पैदा हुआ। दाई नवजात को लेकर ओटी से बाहर आई तो रेखा के परिजनों ने बच्चे को ले लिया। रेखा का भी प्रसव आपरेशन से कराया गया। उसको बेटी पैदा हुई। दाई रेखा के परिजनों को बच्चे को देने लगी तो परिजनों ने यह कहकर इंकार कर दिया गया कि उन्हें बेटा मिल गया है। जबकि स्वास्थ्य कर्मचारी बार-बार कह रहे थे कि रेखा को बेटी पैदा हुई और पूजा को बेटा। इसी बात को लेकर रेखा और पूजा के परिजनों में कहासुनी होने लगी। यह मामला बढ़ने पर दोनों पक्षों ने हंगामा शुरु कर दिया। सीएमएस ने इसकी जानकारी कोतवाली पुलिस के साथ सीओ को दी। किसी तरह दोनों पक्षों को सीओ ने समझाकर शांत कराया और दोनों प्रसूताओं को अलग-अलग वार्ड में भर्ती करा दिया गया। सीओ ने कहा कि परिजनों की संतुष्ट के लिये डीएनए टेस्ट कराया जाएगा जिससे किसी प्रकार का मतभेद न हो।

चार आरोपियों के खिलाफ मारपीट व तोडफोड़ की रिपोर्ट दर्ज

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने चार आरोपियों के खिलाफ मारपीट, तोडफोड, गालीगलौज व जानलेवा धमकी का मुकदमा दर्ज किया है। लालगंज कोतवाली के सराय रायजू गांव निवासी सुनील कुमार की पत्नी माया देवी ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि बीते उन्तीस अगस्त को सुबह साढे सात बजे पुरानी रंजिश को लेकर गांव के रामलाल पुत्र दुखी, सुभाष पुत्र रामलाल, पिंकी पाल पत्नी सुभाष पाल तथा ज्ञानती पाल पत्नी रामलाल पाल उसके दरवाजे पर चढ़ आये। आरोपीगण गालीगलौज करते हुए पीड़िता को मारने पीटने लगे तथा दरवाजे पर रखी चारपाई को भी तोडकर नष्ट कर दिया। पीड़िता के शोर मचाने पर गांव के लोगों को आते देख आरोपीगण जानलेवा धमकी देते चले गये। पुलिस ने घटना की जांच पड़ताल के बाद सोमवार की शाम रामलाल समेत चार लोगों के खिलाफ मारपीट, गाली गलौज, तोड़फोड़ व जानलेवा धमकी का मुकदमा दर्ज किया है।

मजदूरी न मिलने से मजदूरों ने बीडीओ का किया घेराव

बीडीओ के आश्वासन पर माने मजदूर

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। मजदूरी न मिलने से मजदूरों ने बाबा बेलखरनाथ धाम के बीडीओ का घेराव किया। बाबा बेलखरनाथ विकासखंड के सरखेलपुर गांव के मजदूरों ने आज बीडीओ के समक्ष पेश होकर पिछले प्रधान के कार्यकाल में मनरेगा में किए गए बंधा व चकमार्ग निर्माण के कार्य की मजदूरी ना मिलने की बात को बताया।मजदूरों ने कहा कि हम लोगों को लगभग एक वर्ष हो गया है। मजदूरी का भुगतान नहीं किया गया। हम लोगों के खाने के लाले पड़े हुए हैं। मजदूरों ने यहां तक बताया कि हम लोगों का पैसा दूसरों के खाते में भेज दिया गया है हम लोग दौड़ कर थक चुके हैं ग्रामीण काफी आक्रोश में थे। बेलखरनाथ खंड विकास अधिकारी के आश्वासन के बाद सभी मजदूर मानने को तैयार हुए। इस मौके पर ग्रामीणों में इसरावती देवी, राजेश कुमार, राजमणि, रामखेलावन, गीता देवी, पिंकी देवी, रामप्रताप, ललन सिंह, श्यामलाल, सहित अन्य ग्रामीण मजदूर मौजूद थे। ग्रामीणों ने इसकी शिकायत जिलाधिकारी, उच्चाधिकारियों व ब्लॉक के ग्राम पंचायत अधिकारी से किया गया।

आगजनी से राहत के लिए पूर्व मंत्री ने दी आर्थिक सहायता

26 अप्रैल को विधवा की दुकान में लगी थी आग

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। कंधई थाना क्षेत्र के रखहा बाजार निवासी स्वर्गीय सुरेश चंद्र उमर वैश्य की विधवा केश कुमारी रखहा बाजार में किराना की दुकान खोलकर अपना जीविकोपार्जन करती है। बीते 26 अप्रैल की रात अचानक उसके दुकान में बिजली के शार्टसर्किट से आग लग गई थी जिससे दुकान में रखा सामान जलकर राख हो गया। आग लगने की सूचना पर मौके पर पहुंचे प्रदेश के पूर्व मंत्री प्रो. शिवाकान्त ओझा ने घटना को दुखद बताते हुए समाजवादी पार्टी द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान करने की बात कही थी। इसी क्रम में मंगलवार को विधवा की दुकान पर पहुंचे प्रदेश के पूर्व मंत्री प्रो. शिवाकांत ओझा ने उसे आर्थिक सहायता प्रदान करते हुए दुकान पुनः स्थापित करने में सहयोग प्रदान किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी कथनी और करनी में फर्क नहीं करती। पीडित चाहे किसी जाति और धर्म का हो वह हर गरीब मजलूम के साथ खड़ा है। इस दौरान सपा नेता आशुतोष पान्डेय, नरेंद्र ओझा, अनिल तिवारी, मोहम्मद नसीम, इन्द्राज सिंह, राजेश विश्वकर्मा, लक्ष्मण सिंह, मनीष सिंह, मोहम्मद राशिद, राकेश यादव बीडीसी आदि मौजूद रहे।

असंतुष्ट छात्रों की परीक्षा के लिये बोर्ड ने तय किये 17 परीक्षा केन्द्र

जिला विद्यालय निरीक्षक बना कन्ट्रोल रुम

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद की हाईस्कूल व इंटर की परीक्षाफल से असंतुष्ट छात्र-छात्राओं की परीक्षा 18 सितम्बर को जिले में निर्धारित 17 परीक्षा केन्द्रों पर होगी। परीक्षा केन्द्रों का निर्धारण कर दिया गया है। इसके अनुसार इंटर कालेज मानधाता, जयनाथ मानव इंटर कालेज बैजलपुर, राजकीय इंटर कालेज प्रतापगढ़, बृजेन्द्रमणि इंटर कालेज कोहंडौर, कालूराम इंटर कालेज शीतलागंज, रामराज इंटर कालेज पट्टी, रायबद्री इंटर कालेज बीरापुर, शीतला प्रसाद इंटर कालेज गड़वारा, राम अंजोर इंटर कालेज लालगंज, गजाधर इंटर कालेज लक्ष्मणपुर, इंटर कालेज बाबागंज, इंटर कालेज संग्रामगढ़, बलभद्र इंटर कालेज डीहा, जगदीश जनता देवरहवा बाबा इंटर कालेज, हनुमत इंटर कालेज कालाकांकर, राजकीय बालिका इंटर कालेज सांगीपुर, राजकीय बालिका इंटर कालेज बरहदा परीक्षा केन्द्र बनाये गये हैं।

मण्डलायुक्त की फटकार के बाद जिला अस्पताल में लगी नाला क्लीनिंग मशीन

निर्माण कार्य के कारण जिला अस्पताल की नालियां हैं चोक, होता है जलभराव

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रयागराज के मण्डलायुक्त संजय गोयल द्वारा सोमवार को जिला अस्पताल में गंदगी, जलभराव व गाड़ियों की पार्किंग को लेकर नाराजगी व्यक्त किये जाने के बाद मंगलवार को जिला अस्पताल के अनुरोध पर नगर पालिका ने नाला क्लीनिंग मशीन लगाकर अस्पताल की चोक नालियों की सफाई की।

बता दें कि जिला अस्पताल में हो रहे निर्माण से नाले-नालियों के चोक होने से अस्पताल परिसर में जलभराव रहता है। यह जलभराव देखकर आयुक्त ने गहरी नाराजगी जताई थी, जिस पर मंगलवार को नालियों को साफ किया जा रहा है जिससे पानी का जमाव न हो सके। खास तौर से जब डेंगू का प्रभाव कई जनपदों में फैला हुआ है। ऐसे में विशेष सतर्कता बरतने की जरुरत है। आयुक्त ने कड़ाई से कहा था

कि हर हाल में जलभराव व गंदगी खत्म होनी चाहिये। इसके अलावा बाबागंज स्थित अटल पार्क के आसपास नालियां भी जाम होने से वहां रहने वाले लोगों को दिक्कत हो रही थी। नगर पालिका ने नाला क्लीनिंग मशीन व नाला गैंग लगाकर साफ-सफाई की। यह जानकारी देते हुए नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि अध्यक्षा प्रेमलता सिंह व अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह के निर्देशन में डेंगू से बचाव के लिये नगर के हर वार्ड में साफ-सफाई का अभियान चलाया जा रहा है। आज सदर बाजार मोहल्ले में भी नाला गैंग लगाकर नाले-नालियों की विधिवत साफ-सफाई की गई।

बाजार में अराजकतत्वों की दहशत, व्यापारियों में असंतोष

पट्टी, प्रतापगढ़। बाजार में अराजक तत्वों ने अपना धाक जमाने के लिए दहशत बना रखा है। देवसरा क्षेत्र के गौरामाफी बाजार में सोमवार की रात करीब 11 बजे दो बाइक पर सवार पांच दबंगों ने गौरामाफी गांव निवासी राम लवट बरनवाल पुत्र रामचन्द्र की किराना की दुकान हैं। किसी खुन्नश को लेकर बाइक सवार दबंगों ने उनकी दुकान के बंद शटर पर ईंट पत्थर मारने लगे। छत पर सो रहे राम लवट ने जब इसका विरोध किया तो दबंगों ने गाली गलौज देते हुए कहा कि सभी व्यापारियों से हप्ता वसूली करूंगा। फिर दबंगों ने बगल स्थित राम आसरे यादव निवासी केवटलीखुर्द जनपद जौनपुर के मेड़िकल की शटर पर धावा बोल दिया। शोरगुल की आवाज सुनकर पड़ोसी दुकानदार मुन्नू यादव पुत्र राम कुबेर यादव ने छत से आवाज दी कि आखिर बात क्या हैं। तो दबंगों ने उनकी मेड़िकल स्टोर्स की शटर पर ईट पत्थर से हमला बोल दिया। जिससे शटर में निशान पड़ गया। इसके बाद दबंगों ने मुन्नू यादव के दुकान के सामने रखा सीमेंट के पतरा को उठा-उठा कर पटक दिया। घटना की सूचना के आधे घंटे बाद 112 पुलिस मौके पर पहुंची तब तक दबंग फरार हो चुके थे, मंगलवार की सुबह दस बजे एसओं आसपुर देवसरा हमराहियों के साथ पहुंचकर मामले की जांच की।

प्राध्यापक की पत्नी से लूट पर महाविद्यालय परिवार में आक्रोश

एमडीपीजी के प्रधानाचार्य सहित प्राध्यापकों ने जताया रोष

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। महिला सुरक्षा एवं महिला सशक्तिकरण की बात करने वाली सरकार में आए दिन महिलाओं के साथ छिनैती, लूटपाट एवं मारपीट की घटनाएं हो रही हैं। बीते 4 सितंबर को पुलिस अधीक्षक कार्यालय के समक्ष चार युवकों द्वारा एमडीपीजी कॉलेज के वाणिज्य संकाय के अध्यक्ष डॉ छवि नारायण पांडे की शिक्षिका पत्नी पर हमला कर हीरे का नग लगी सोने की कील छीन ले गए थे। पुलिस ने इस मामले में अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की जिससे अपराधियों के हौसले बुलंद हैं।

एमडीपीजी कॉलेज के प्राचार्य डॉ ए के श्रीवास्तव ने घटना की तीव्र भर्त्सना की है और कहा है कि इस घटना से पूरा महाविद्यालय परिवार आक्रोशित है उन्होंने अपराधियों की अविलंब गिरफ्तारी और उनके विरुद्ध कठोर कार्यवाही की मांग की है। प्रो राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय महाविद्यालय शिक्षक संघ के अध्यक्ष डॉप्रदीप कुमार सिंह ने भी घटना की निंदा करते हुए गहरा आक्रोश व्यक्त किया है और चेताया है कि यदि घटना के जिम्मेदार अपराधियों के विरुद्ध तत्काल कार्यवाही न की गई तो विश्वविद्यालय महाविद्यालय शिक्षक संघ आंदोलन को बाध्य होगा। युवा चेतना मंच उत्तर प्रदेश की एक आपात बैठक मंच के केंद्रीय कार्यालय पर संगठन के प्रांतीय अध्यक्ष ललित पांडे की अध्यक्षता में आयोजित की गई जिसमें मंच के प्रांतीय संयोजक एवं एमडीपीजी के वाणिज्य संकाय के अध्यक्ष की पत्नी पर हमला कर की गई छिनैती की घटना की तीव्र भर्त्सना की गई और घटना के जिम्मेदार अपराधियों के विरुद्ध शीघ्र कार्रवाई न किए जाने पर प्रदेश व्यापी आंदोलन की चेतावनी दी गई। बैठक में महामंत्री देवमणि तिवारी, भानु प्रताप पांडे, सुरेंद्र प्रसाद पांडे, तीर्थराज मिश्र, आयुष त्रिपाठी, राजेश सिंह आदि उपस्थित रहे।

20 वर्ष बाद बिहार में नियुक्त किए गए क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी

अखंड भारत संदेश

बाघराय, प्रतापगढ़। विकास खंड बिहार में क्षेत्रीय युवा कल्याण विभाग द्वारा लगभग 20 वर्ष से स्थाई रूप से युवा कल्याण अधिकारी की नियुक्ति नहीं की गई थी। अभी तक मात्र कागजों में ही कोई युवा कल्याण अधिकारी चार्ज पर रहता था। इसकी शिकायत क्षेत्र के युवाओं ने जिलाधिकारी से की थी। मामले को संज्ञान में लेते हुए जिला युवा कल्याण अधिकारी अरुण कुमार सिंह ने बिहार ब्लॉक

में क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी के रूप में अभिनव शुक्ला को नियुक्त किया। आज ब्लॉक बिहार मुख्यालय पर अभिनव शुक्ला ने विकासखंड बिहार में युवा कल्याण अधिकारी का कार्यभार ग्रहण कर लिया है। युवक मंगल दल कोर्रही के अध्यक्ष रामबाबू नामदेव ने कहा कि अब निश्चित तौर पर हर ग्राम पंचायत में युवक मंगल दल का गठन होगा और युवाओं के खेलकूद के आयोजन समय-समय पर आयोजित होंगे युवाओं को नई ऊर्जा मिलेगी।

वांछित आरोपी थाने के लॉकअप से फरार, घेराबंदी कर किया गिरफ्तार

14 जुलाई को पेट्रोल पम्प पर की थी फायरिंग

अखंड भारत संदेश

रानीगंज, प्रतापगढ़। जानलेवा हमले का एक आरोपी थाने के लाकअप से फरार हो गया। आरोपी बाथरूम के बहाने पुलिस को चकमा देकर निकला। रानीगंज पुलिस आरोपी को मुम्बई से गिरफ्तार करके रानीगंज थाने ले आई थी। इस दौरान पुलिस ने उसकी दुबारा घेराबंदी करके उसे गिरफ्तार कर लिया। बता दें कि जानलेवा हमले में वांछित शिवम मिश्रा पुलिस की पकड़ से बाहर था। कड़ी मशक्कत के बाद रानीगंज पुलिस ने उसे मुम्बई से गिरफ्तार कर सोमवार की रात प्रतापगढ़ ले आई। इस दौरान मंगलवार को उसे रानीगंज थाने ले आया गया। यहां पर आरोपी शिवम ने बाथरुम जाने के लिये कहा। इस दौरान वह बाथरुम करने के बहाने लाकअप से फरार हो गया। इसे लेकर थाना परिसर में हड़कंप मच गया। सीओ रानीगंज समेत भारी पुलिस उसकी तलाश कर रही थी। सूत्रों से पता चला है कि शिवम का पता चल गया है और उसकी घेराबंदी कर उसे दुबारा गिरफ्तार किया गया है। इस दौरान मुम्बई से गिरफ्तार कर रानीगंज थाने में लाए गए आरोपी की आव-भगत करने की भी चर्चा जोरों पर है। आरोपी शिवम पर 14 जुलाई को पेट्रोल पम्प पर फायरिंग व जानलेवा हमला करने का आरोप है।

नौकरी का झांसा देकर नाबालिग छात्रा से किया बलात्कार

प्रतापगढ़। रानीगंज कोतवाली क्षेत्र के एक गांव की नाबालिग छात्रा को नौकरी का झांसा देकर आरोपी ने हफ्तों बलात्कार किया। अमेठी जिले का रहने वाला दबंग आरोपी कानपुर में नौकरी दिलाने के नाम पर आबरु लूटी पीड़ित परिजनों को सुराग लगने पर कानपुर पहुंचने पर आरोपी ने पीड़ित को मार पीट कर भगाया। आरोपी की चंगुल से पीड़ित छात्रा किसी तरह छूटकर घर पहुंची। अब पीड़ित कुनबा एसपी आफिस के कार्यालय में न्याय की आस में चक्कर लगा रहे हैं।

पति समेत तीन लोगों के खिलाफ दहेज उत्पीड़न की रिपोर्ट दर्ज

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने दहेज प्रताड़ना, गालीगलौज व मारपीट की घटना को लेकर पति समेत तीन ससुरालीजनों के खिलाफ दहेज उत्पीड़न, मारपीट व धमकी का मुकदमा दर्ज किया है। सांगीपुर थाना क्षेत्र के भैंसना गांव की खुशबू पत्नी शाहिद उर्फ मोनू के अनुसार उसका मायका लालगंज मे है। पीड़िता ने लालगंज कोतवाली पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि उसका विवाह लगभग पांच वर्ष पूर्व हुआ था। उसके दो बच्चे भी है। लेकिन दहेज मे ससुरालीजन चारपहिया वाहन की मांग कर रहे है। मायके द्वारा मांग पूरी न कर पाने पर बीते दो सितंबर की सुबह लगभग साढे ग्यारह बजे पति शाहिद उर्फ मोनू पुत्र रहीस तथा सास रबीशुलनिशा व अलीरजा पुत्र बाबू ने उसे मारापीटा तथा गाली एवं जान से मारने की धमकी दिया। इसके बाद पीड़िता को जबरन उसके मायके लालगंज भेज दिया। मामले मे तहरीर के आधार पर लालगंज कोतवाली पुलिस ने पति शाहिद समेत तीन लोगों के खिलाफ दहेज उत्पीड़न, गाली-गलौज व मारपीट तथा धमकी का मुकदमा दर्ज किया गया है।

अवैध देसी बम के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

प्रतापगढ़। थाना रानीगंज से उ0नि0 योगेश चतुर्वेदी मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान थाना क्षेत्र के शिवगढ़ तिराहे के पास से एक व्यक्ति मो0 सोहेल पुत्र मो0 अनीश निवासी रामपुर अधारगंज, थाना रानीगंज जनपद प्रतापगढ़ को चार अदद अवैध देसी बम के साथ गिरफ्तार किया गया। इस सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 476/21 धारा 4/5 विस्फोटक पदार्थ अधि0 का अभियोग पंजीकृत किया गया।

फर्जी आंकड़ेबाजी से पूरी नहीं होगी ड्यूटी, बैठक में पूरी तैयारी से आएंःआर्यका अखौरी

बैठक में बिना तैयारी के आने वाले अफसरों की खैर नहीं

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। फर्जी आंकड़ेबाजी के जरिए ड्यूटी पूरी करने वाले अफसर अपनी सोच और कार्यशैली में बदलाव ले आएं। ऐसा करके वह ज्यादा दिन तक अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकते। जिसे, जो जिम्मेदारी मिली है, उसका पूरा पालन किया जाए। बैठक में आने से पहले पूरी तैयारी करें, फिर बैठक में आएं। विभिन्न विभागों के अफसरों के साथ आयोजित बैठक में जिलाधिकारी आर्यका अखौरी आज पूरे फार्म में नजर आईं।उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि अब बहानेबाजी करके जिम्मेदारी से बचना नहीं हो पाएगा, जिसकी जो जिम्मेदारी है, उसका समय से अनुपालन किया जाए और विकास कार्यों को प्रत्येक दशा में समय सीमा के भीतर पूर्ण कराएं।

कलेक्ट्रेट सभागार में विकास कार्योंकीमासिक समीक्षा बैठक में जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने कहा कि संबंधित अधिकारी अपने-अपने विभागों के कार्यों को समय सीमा के भीतर पूर्ण कराये। अधिशासी अभियन्ता (विद्युत) को निर्देश दिया कि शासन द्वारा निर्धारित रोस्टर के अनुरूप ग्रामीणश्शहरी क्षेत्रों में विद्युत आपूर्ति कराना सुनिश्चित कराए जाए। इसके अलावा जर्जर तार व खराब ट्रांसफार्मरों को बदला जाए।मुख्यमंत्री रोजगार सृजन योजना/प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना की समीक्षा करते हुए कहा कि मनचाहे लोगों को ऋण स्वीकृत कराने वाले बिचौलियों को चिह्नित कर उनके खिलाफ केस दर्ज करवाया जाए। श्रम विभाग की समीक्षा के दौरान श्रम प्रवर्तन अधिकारी को निर्देश दिया कि ज्यादा से ज्यादा मजदूरों का पंजीकरण कराएं और योजनाओं का लाभ दिलाएं। जिला पूर्ति कार्यालय की समीक्षा के साथ जिलाधिकारी ने एमएसएमई, ओडीओ योजना के बारे में जानकारी ली। जिलाधिकारी ने विभिन्न योजनाओं प्रधानमंत्री आवास ग्रामीण, प्रधानमंत्री आवास शहरी, मुख्यमंत्री आवास ग्रामीण/शहरी, पेंशन, इत्यादि योजनाओं के बारे में विस्तृत चर्चा की गई। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी भानु प्रताप सिंह, जिला अर्थ संख्याधिकारी संतोष कुमार सिंह, जिला परियोजना अधिकारी मनोज कुमार राय, कृषि उपनिदेशक अरविंद कुमार सिंह, जिला उद्योग अधिकारी हरेंद्र प्रताप, जिला समाज कल्याण अधिकारी महेंद्र यादव, जिला खाद्यी ग्रामोद्योग अधिकारी जवाहर लाल एवं संबंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

माह के अंत तक करवाएं भूमि विवादों का निपटारा

जिलाधिकारी ने की राजस्व वसूली की समीक्षा

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने आज कर-करेत्तर/राजस्व वसूली की समीक्षा की। कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित बैठक में उन्होंने उप जिलाधिकारियों को निर्देशित किया कि लक्ष्य के सापेक्ष राजस्व वसूली पूरी करें, इसमें किसी तरह की ढिलाई बर्दाश्त नहीं की जाएगी। कुछ विभागों द्वारा लक्ष्य के अनुरूप राजस्व वसूली नहीं की गई है, यह चिंताजनक है। जिन विभागों में परिवर्तन आवश्यक हो, उसे अवश्य करें ताकि राजस्व वसूली में किसी भी तरह की कमी न आए।जिलाधिकारी ने अधिशासी अभियंता विद्युत को निर्देशित किया कि किसी भी उपभोक्ता पर बिजली का गलत बिल न भेजा जाए, इसमें सुधार की आवश्यकता है। अगर बार-बार कहने के बावजूद उपभोक्ता पर बिजली का गलत बिल जाता है तो संबंधित अधिकारी के प्रति कार्यवाही की जाएगी। बिजली संबंधित शिकायत प्राप्त ना हो। उन्होंने कहा कि तहसीलों पर वसूली कम की गई है, 15 सितंबर के पहले लक्ष्य के अनुरूप वसूली कर ली जाए। राजस्व वसूली कम होने पर जिलाधिकारी ने तहसीलदारों को भी चेतावनी दी। कहा कि यह स्थिति अपने कर्तव्य के प्रति लापरवाही है, उन्होंने कहा जिनकी आरसी कटी हुई है, नोटिस जारी करके उनकी वुकर्की की जाए। सभी उप जिलाधिकरियों को निर्देश दिया कि

वसूली कम मिलने पर अफसरों को दी चेतावनी

इस माह के अंत तक तहसीलों में लंबित भूमि विवादों, मुकदमों को निस्तारण कराएं, अन्यथा की दशा में कठोर कार्रवाई की जाएगी। जिलाधिकारी ने कर करेत्तर एवं लक्ष्य वसूली के संबंध में निर्देश दिया कि लंबित राजस्व वादों का निस्तारण शीघ्र किया जाए। कुछ तहसीलों में लक्ष्य के अनुरूप वादों का निस्तारण न किए जाने पर नाराजगी व्यक्त करते हुये तत्काल लक्ष्य निर्धारित करने के निर्देश दिये। इसके अलावा अविवादित वरासत, दाखिल-खारिज, तालाब, आवासीय भूमि, कृषि भूमि, पौधरोपण, चकमार्ग, तालाब-पोखरे के संबंध में चर्चा की गई। जिलाधिकारी ने आईजीआरएस से प्राप्त शिकायतों के निस्तारण के क्रम में इंटी भू माफिया जैसे कार्यों पर अब तक किये गये कार्यों की प्रगति को बढ़ाने का निर्देश दिया है। कर-करेतर की वार्षिक लक्ष्य के सापेक्ष पूर्ति के संबंध में वाणिज्य कर, स्टांप एवं रजिस्ट्रेशन, आबकारी, परिवहन, ऊर्जा विभाग, नगर विकास, वन विभाग, खनन, कृषि विपणन/मंडी समिति सिंचाई विभाग के वार्षिक लक्ष्य को निर्धारित समय में राजस्व की वसूली पूरी करने के निर्देश दिया है। आबकारी विभाग को निर्देशित किया कि किसी भी स्थल पर कोई अवैध शराब व ओवर रेटिंग शराब बिक्री नहीं होनी चाहिए इसके लिए वृहद अभियान चलाया जाए। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी शैलेन्द्र कुमार मिश्र, उप जिलाधिकारी भदोही आशीष मिश्र, तहसीलदार औराई देवेन्द्र यादव, तहसीलदार ज्ञानपुर तनुजा निगम, तहसीलदार भदोही सत्यपाल प्रजापति, एनआईसी अधिकारी अभिषेक कुमार मिश्र एवं संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

मतदेय स्थल संशोधनः 66 आपत्तियों में 29 स्वीकृत

अखंड भारत संदेश

भदोही। आगामी विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 के मद्देनजर प्रशासन ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। मतदान स्थलों के संशोधन के लिए आज कलेक्ट्रेट सभागार में जिला निर्वाचन अधिकारी/जिलाधिकारी आर्यका अखौरी की अध्यक्षता बैठक हुई, जिसमें राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जिलाधिकारी ने कहा कि मतदेय स्थलों का निर्धारण/संशोधन भारत निर्वाचन आयोग के दिशानिर्देशों के अनुरूप किया जाएगा। इसके लिए आयोग द्वारा समय सारिणी भी निर्गत की गई है। जिलाधिकारी ने बताया कि मतदेय स्थलों के संशोधन के लिए 66 आपत्तियां प्राप्त हुई हैं, जिसमें से जांचोपरांत 29 आपत्तियां स्वीकृत की गई हैं। जबकि 37 आपत्तियां आयोग के मानक के अनरूप न होने के कारण अस्वीकृति कर दी गई। जिलाधिकारी ने बताया कि 15 सितंबर को कंट्रोल टेबल की एंट्री की तिथि निर्धारित की गई है। विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों के अनुसार स्थलोंध् मतदेय स्थलों की नई सूची में कोई सहायक मतदान स्थल नहीं रखा जाएगा। विशेष परिस्थितियों में 300 से कम मतदाता वाले स्थलों को रखा जाना अनिवार्य हो तो प्रस्ताव में मतदेय स्थल को बनाए रखे जाने के संबंध में स्पष्ट कारण का उल्लेख किया जाएगा। किसी भी राजनीतिक दल या लेबर यूनियन के कार्यालय से 200 मीटर के अंदर कोई भी मतदान स्थल नहीं बनाया जाएगा। यह भी सुनिश्चित कर लिया जाएगा कि मतदेय स्थलों के स्थान में अंतिम क्षणों में परिवर्तन न रह जाए। बैठक में राजनीतिक दलों से भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुरूप मतदेय स्थलों के संभाजन में सहयोग की अपेक्षा की गई। बैठक में राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ अपर जिलाधिकारी शैलेन्द्र कुमार मिश्र, उप जिलाधिकारी भदोही आशीष मिश्रा आदि मौजूद रहे।

शीघ्र दूर होंगी व्यापारियों की समस्याएं ः रामकृष्ण भारद्वाज

विभागीय बैठक में की अपराध की समीक्षा, लंबित प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण का आदेश

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। पुलिस उप महानिरीक्षक (विंध्याचल परिक्षेत्र) रामकृष्ण भारद्वाज आज पुलिस लाइन ज्ञानपुर में व्यापारियों और जनप्रतिनिधियों के साथ बैठक की। व्यापारियों की समस्याओं से अवगत होते हुए डीआईजी शीघ्र निराकरण का आश्वासन दिया। कहा कि जिन समस्याओं का समाधान मेरे स्तर से होना है, उसे तत्काल पूरा कर दिया जाएगा और कुछ के लिए शासन से लिखापढ़ी की जाएगी। इस दौरान व्यापारियों ने पुलिस की गश्त पर सवालिया निशान लगाया। व्यापारियों ने कहा कि गश्त के नाम पर पुलिस एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर बैठ जाती है। ऐसी गश्त

पुलिस उप महानिरीक्षक विंध्याचल परिक्षेत्र ने व्यापारियों और जनप्रतिनिधियों के साथ की बैठक

का कोई मतलब नहीं निकलता। व्यापारियों के इस सवाल पर रामकृष्ण भारद्वाज ने कहा कि इसका भी उचित समाधान किया जाएगा। कहा कि पुलिस विभाग से व्यापारियों को किसी भी प्रकार की समस्या नहीं होने पाएगी। इसके लिए सभी आश्वस्त रहें। सुरक्षा व्यवस्था के मुद्दे पर भी उन्होंने आश्वासन दिया।व्यापारियों और जनप्रतिनिधियों की बैठक से फारिग होने के उपरांत डीआईजी ने पत्रकार प्रतिनिधियों से बातचीत की। तत्पश्चात विभागीय बैठक में सहभागिता की। मातहत अफसरों और कर्मियों के साथ बैठक उन्होंने अपराध की समीक्षा करते हुए लंबित मामलों के शीघ्र निस्तारण, जनपद में गश्त बढ़ाने और अपराधियों की धरपकड़ में तेजीलाने के लिए निर्देशित किया। जनपद में पहली दफा आए पुलिस उप महानिरीक्षक रामकृष्ण को पुलिस जवानों ने गार्ड आफ ऑनर दिया। उक्त कार्यक्रमों में एसपी रामबदन के साथ ही सभी मातहत अफसर मौजूद रहे।

धीरज सिंह अध्यक्ष और क्रांतिमान शुक्ला बने महामंत्री

डायट के सभागार में आयोजित संगोष्ठी में शिक्षक नेताओं ने रखे विचार

राष्ट्रीय शिक्षक महासंघ की जनपद इकाई का सर्वसम्मति से हुआ गठन

अखंड भारत संदेश

भदोही। राष्ट्रीय शिक्षक महासंघ की शिक्षक उन्नयन संगोष्ठी में आज जिला इकाई का गठन किया गया। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) के सभागार में आयोजित संगोष्ठी में सर्वसम्मति से जिला कार्यकारिणी का गठन किया गया, जिसमें जिलाध्यक्ष धीरज सिंह, महामंत्री क्रांतिमान शुक्ला, संगठन मंत्री रितेश तिवारी, संयुक्त महामंत्री देवेंद्र विश्वास, कोषाध्यक्ष सुरेश कुमार और उपाध्यक्ष पद की जिम्मेदारी (जिलाध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ) शिल्पी प्रिया को दी गई। कार्यक्रम के मुख्य

वक्ता संगठन मंत्री ओमपाल ने कहा कि राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ, शिक्षकों के स्वाभिमान, सम्मान और स्वावलंबन के लिए सदैव काम करने वाला संगठन है। इसका उद्देश्य शिक्षा, शिक्षार्थी और शिक्षालय सभी का सर्वांगीण हित करना है। चीफ गेस्ट प्रदेश अध्यक्ष अजीत सिंह ने कहा कि शैक्षिक महासंघ का विस्तार आज प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय तक है, जिससे जुड़कर लाखों शिक्षक अपने हक की आवाज बुलंद कर रहे हैं।

कार्यक्रम के अंत में जिला इकाई के नवनिर्वाचित जिलाध्यक्ष धीरज सिंह ने सभी के प्रति आभार जताया। कहा कि संगठन ने जिस भरोसे के साथ उन्हे यह जिम्मेदारी सौंपी है, वह उसे पूरा करने में जी-जान लगा देंगे। परिवार रूपी संगठन के प्रत्येक सदस्य के हक-हुकूक के लिए हमेशा संघर्ष का वादा किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि सुरेंद्र कुमार पांडेय (प्रदेश मंत्री रा.शै.महासंघ/निर्वाचन पर्यवेक्षक), शशांक पांडेय (प्रदेश संयुक्त मंत्री रा.शै. महासंघ), अखिलेश मिश्र 'वत्स' (मंडल संयोजक रा.शै.महासंघ/निर्वाचन अधिकारी) समेत पतंजलि योग समिति के राज्य प्रभारी संदेश योगी, संतोष सिंह, प्रतीक मालवीय (ब्लॉक अध्यक्ष ज्ञानपुर), मनीष पांडेय (ब्लॉक अध्यक्ष डीघ), अरुण यति जिलाध्यक्ष अनुदेशक संघ दिलीप सिंह, प्रदीप उपाध्याय, भूपेंद्र सिंह, महेश यादव, लाल बहादुर, आशीष दुबे, शिव प्रसाद, निशांत यादव, शिव सागर, अनिल, रत्नेश, विनय पांडेय, अशोक सिंह, विपिन मौर्य, ओम दुबे, दिलीप शुक्ला, समर बहादुर पटेल, योगिता हेमकर, ज्योति वर्मा, नीतू पाठक, कुसुमलता गुप्ता, अनामिका गुप्ता उपस्थित रहीं।

समय पर सही उपचार से दूर हो सकते हैं सभी मर्ज ः अशोक

मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन

अखंड भारत संदेश

भदोही। राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम अंतर्गत संचालित जिला मानसिक स्वास्थ्य प्रकोष्ठ भदोही टीम द्वारा कोविड-19 प्रोटोकाल का पालन करते हुए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भदोही पर विशाल मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। भदोही नगरपालिका चेयरमैन अशोक जायसवाल द्वारा शिविर का शुभारंभ किया गया। चिकित्सा अधीक्षक डा. वीके सिंह द्वारा मुख्य अतिथि का स्वागत किया गया। मुख्य अतिथि द्वारा जिला मानसिक स्वास्थ्य प्रकोष्ठ टीम के कार्यों की सराहना किया गया। शिविर में कुल 161 मरीजों का रजिस्ट्रेशन किया गया। जिसमें 30 मानसिक रोगियो को चिन्हित करते हुए मनोचिकित्सक डा. अभिनव पांडे द्वारा निदान एवं उपचार किया गया।

नैदानिक मनोवैज्ञानिक डा. अशोक परासर द्वारा मरीजों को परामर्श दिया गया तथा मरीजों एवं तीमारदारों को मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया गया। उन्हें मानसिक रोग के विभिन्न लक्षणों, निदान और उपचार के बारे में जानकारी प्रदान किया गया। मनोचिकित्सकीय सामाजिक कार्यकर्ता डा. शांति कुमारी द्वारा शिविर में आने वाले मरीजों एवं तीमारदारों को जिला चिकित्सालय में संचालित होने वाले जिला मानसिक स्वास्थ्य प्रकोष्ठ एवं जिला परामर्श केंद्र के बारे में अवगत कराया गया। इस दौरान डा. अफरोज, डा. नीलेश, डा. रामपाल, बसंत लाल यादव, चन्द्र प्रकाश, प्रतिमा यादव, शमशेर यादव, करुणाशंकर दूबे, आर के पाल, राहुल कश्यप, कमला शंकर दूबे इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

कैश मेमो पर अंकित करें रसायन का नाम और बैच नंबर

जिला कृषि रक्षा अधिकारी ने कीटनाशक विक्रेताओं को दिए निर्देश

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। जिला कृषि रक्षा अधिकारी ने समस्त कीटनाशक विक्रेताओं को निर्देश दिया है कि प्रायरू निरीक्षण/छापे के दौरान कीटनाशक विक्रेताओं के दुकानध्फर्म पर कई कमियां पाई जाती हैं। कीटनाशी अधिनियम 1968 एवं कीटनाशक नियमावली 1971 के अन्तर्गत कीटनाशक विक्रेताओं द्वारा बेचे जा रहे कीटनाशक, स्टाक की बिक्री तथा वितरण की सूचना प्रत्येक माह की 25 तारीख को कार्यालय में उपलब्ध कराई जाए।

दुकान पर काम करने वाले को दी जाने वाली रकम का साक्ष्य जमा करें।

जिला कृषि रक्षा अधिकारी ने कहा कि किसान भाइयों को रसायन क्रय पर उन्हें कैश मेमो, जिस पर रसायन का नाम, बैच नंबर अंकित किया जाए। किसान भाइयों को फसलों में रसायन के प्रयोग के बारे में सही जानकारी उपलब्ध कराना सभी कीटनाशक विक्रेताओं की जिम्मेदारी है।

वह कीटनाशक अनुज्ञप्तिधारी विक्रेताओं, जिनके द्वारा वर्ष 2017 के बाद कीटनाशक अनुज्ञप्ति पत्र बनवाया गया है और दुकानध्फर्म में बिक्री के लिए नियुक्त कर्मचारी को वेतन देने का प्रमाण, चेक या आनलाइन वेतन भुगतान की ट्रान्सफर की फोटो प्रति भी कार्यालय में अवश्य जमा करें। उक्त के क्रम में जनपद के समस्त कीटनाशक अनुज्ञप्तिधारी विक्रेताओं को निर्देशित किया जाता है कि कीटनाशी अधिनियम 1968 तथा कीटनाशी नियमावली 1971 के नियम निर्देशों का पालन करते हुए ही व्यापार करें। अन्यथा की दशा में निरीक्षण के दौरान पाये जाने पर आपके विरूद्ध कार्यवाही भी की जायेगी। किसी प्रकार की समस्या आनें पर जिला कृषि रक्षा कार्यालय में संपर्क करें।

समस्याओ को लेकर ईओ से मिला सपा का प्रतिनिधिमंडल

भदोही। नगर की ज्वलंत समस्याओं को लेकर मंगलवार को समाजवादी पार्टी के जिला उपाध्यक्ष मो. हसनैन अंसारी के नेतृत्व में सपा नेता नगर पालिका परिषद कार्यालय पहुंचे। जहां पर अधिशासी अधिकारी से मिलकर नगर की समस्याओं के बाबत उनको सात सूत्रीय ज्ञापन सौंपा। वहीं समस्याओं का समाधान न होने पर आंदोलन करने की चेतावनी दी गई। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि नगर में काफी ज्वलंत समस्याएं हैं। इसके कारण जनता त्रस्त व परेशान हैं। जो कभी भी सड़क पर उतर सकती है। जिसका निराकरण होना चाहिए। श्री अंसारी ने कहा कि नगर में जलनिकासी की व्यवस्था बेहद खराब है। जिसको सुदृढ़ किया जाना चाहिए। नगर में सभी अंडरग्राउंड नाली के चौंबर के टूटे हुए ढक्कन को अविलंब बदला जाए।

सरवतखानी के युवक की मुंबई में हत्या

दोस्त को दिया उधार का पैसा लेने गया था मुम्बई आरोपी गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

चौरी। थाना क्षेत्र के सरवतखानी गावं निवासी भोलेनाथ गोस्वामी नामक 35 वर्षीय युवक गत 20 अगस्त को दोस्त को उधार दिये रुपये को लेने के लिए मुंबई गया था। वहां दोस्तों से पैसे की लेनदेन को लेकर झगड़ा हो गया। जिससे मुंबई स्थित नालासोपारा स्थित ब्रिज के निकट भोलानाथ गोस्वामी की हत्या कर दी गयी। वहीं मुंबई से पति के न लौटने पर पत्नी ने चौरी थाने में प्रार्थना पत्र देकर कार्यवाही की मांग की थी।बताया जाता है कि उक्त युवक गत 29 अगस्त को गरुलपुर निवासी एक दोस्त को दिये हुए रुपये का तगादा करने मुंबई गया था। वहीं भोलानाथ ने परिजनों से दोस्त के यहां जाने की बात बताया था और उसी दिन रात आठ

बजे से युवक का मोबाइल बंद होने पर परिजन परेशान हो गए। किसी घटना की आशंका होने के चलते पत्नी संगीता भी मुंबई पहुंच गयी। इस मामले में पत्नी द्वारा मुंबई पुलिस को दोस्त के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराते हुए दोस्तों के ऊपर शक जाहिर किया। मुंबई पुलिस ने शक के आधार पर आरोपी दोस्त को हिरासत में लेकर कड़ाई से पूछताछ करने लगी। पुलिस की कड़ाई से आरोपी दोस्त टूट गया और युवक के हत्या की बात कबूल कर लिया। दोस्त की निशान देही पर चार सितंबर की रात मुंबई के नायगांव से पुलिस ने युवक के शव को बरामद कर लिया। हत्या का कारण पैसे का लेन देन बताया जा रहा है। वहीं पति के मौत पर पत्नी संगीता का रो रोकर बुरा हाल हैं। ऐसी घटना से जहां क्षेत्र में शोक है। वही तरह तरह की चर्चाएं व्याप्त है।

सम्पादकीय

तालिबान में फूट?

काबुल से आ रही खबरों के मुताबिक हक्कानी ग्रुप के लड़ाकों से हुई ऐसी ही एक झड़प में मुल्ला अब्दुल गनी बारादर जख्मी हो गए और उनका पाकिस्तान में इलाज चल रहा है।

अमेरिकी फौज की वापसी के बाद तालिबान ने जितनी आसानी से काबुल पर कब्जा किया, उससे आगे की उसकी राह उतनी ही मुश्किल लग रही है। पिछले शुक्रवार को जुमे की नमाज के बाद नई सरकार का ऐलान किया जाने वाला था, लेकिन वह समयसीमा कब की खत्म हो चुकी। अभी तक यह भी साफ नहीं हुआ है कि अगली सरकार के स्वरूप को लेकर कोई सहमति बन पाएगी या नहीं और बनेगी तो कब तक। इस बीच तालिबान के विभिन्न धड़ों में मतभेद इतने गहरा गए हैं कि वे हिंसक संघर्ष के रूप में प्रकट होने लगे हैं। काबुल से आ रही खबरों के मुताबिक हक्कानी ग्रुप के लड़ाकों से हुई ऐसी ही एक झड़प में मुल्ला अब्दुल गनी बारादर जख्मी हो गए और उनका पाकिस्तान में इलाज चल रहा है। हालात इतने गंभीर हो गए कि अब तक खुद को अफगानिस्तान में शांति स्थापना की कामना तक सीमित बताने वाले पाकिस्तान को तत्काल अपनी कथित न्यूट्रल भूमिका से कूद कर ट्रबलशूटर के रोल में आना पड़ा। आईएसआई चीफ लेफ्टिनेंट जनरल फैज हमीद शनिवार को ही काबुल पहुंच गए और सभी पक्षों से बातचीत के जरिए बीच का कोई रास्ता निकालने में लग गए।

इस बीच तालिबान लड़ाकों ने पंजशीर घाटी पर अपने कब्जे का दावा पेश कर दिया है। हालांकि नैशनल रेजिस्टेंस फ्रंट ने इन दावों को गलत बताते हुए लड़ाई जारी रखने की बात कही है, लेकिन तालिबान की ओर से जारी किए गए विडियो से साफ लगता है कि पंजशीर के प्रमुख ठिकानों पर वे काबिज हो चुके हैं। दिलचस्प बात यह है कि इस कब्जे के पीछे भी पाकिस्तान का हाथ बताया जा रहा है। नैशनल रेजिस्टेंस की तरफ से कहा गया है कि तालिबान के वेश में पाकिस्तान वायुसेना के जवान लड़ रहे हैं। तालिबान के साथ पाकिस्तान की सांठगांठ इस कदर उजागर हो चुकी है कि अब उसके खंडन का कोई खास मतलब नहीं रह गया है। फिर भी यह कहना मुश्किल है कि पाकिस्तान की मदद तालिबान के आपसी मतभेदों को सुलझा पाएगी या जाने अनजाने इसे और उलझा देगी। फिलहाल हक्कानी नेटवर्क ने साफ कर दिया है कि अखुंदजादा को सुप्रीम लीडर बनाने का प्रस्ताव उसे मान्य नहीं है। अन्य ग्रुपों की भी अपनी अलग प्राथमिकताएं हैं। इनमें से कौन-कौन स्वेच्छा से अपनी प्राथमिकताओं को छोड़ने के लिए राजी होगा और क्यों यह देखने वाली बात होगी। आम तौर पर अगर मतभेदों को बंदूक के सहारे सुलझाने की आदत हो जाती है तो शांतिपूर्ण बातचीत के रास्ते किसी हल तक पहुंचना लगभग नामुमकिन हो जाता है। अफगानिस्तान में होम करते हुए हाथ जलाने वालों की संख्या कम नहीं है। देखना यह होगा कि अमेरिका की ताजा मिसाल के बाद भी अफगानिस्तान के आंतरिक मामलों में नाक घुसाने वाले पाकिस्तान की आगे क्या गति होती है।

महिलाओं की आजादी छीन रही 'तालिबानी सोच' पर खामोश क्यों हैं आप?

दिव्या गौरव त्रिपाठी

तालिबान की ओर से अफगानिस्तान के उच्च शिक्षा मंत्रालय के कार्यवाहक मंत्री के रूप में नियुक्त किए गए अब्दुल बकी हक्कानी ने कहा कि महिला छात्रों के लिए कक्षाएं पुरुषों से अलग होंगी। कुछ दिनों पहले सरकारी और निजी विश्वविद्यालयों के अधिकारियों और कर्मचारियों से हक्कानी ने बात की। उन्होंने कहा कि अफगान लड़कियों को पढ़ने का अधिकार है, लेकिन वे लड़कों के साथ एक ही क्लसरूम में नहीं पढ़ सकती हैं। अब सवाल ये है कि एक महिला के तौर पर मेरे अधिकार, मेरी जिम्मेदारियां, मेरे विचार, मेरा भविष्य तय करने वाला कोई संगठन कौन होता है? कैसे कोई आतंकी संगठन ये तय कर सकता है कि किसे क्या करना है, क्या पहनना है, क्या खाना है, क्या नहीं करना है। और ये बात सिर्फ तालिबान की नहीं है। ये बात भारत में भी हो रही है।भारत में जमीयत उलेमा-ए-हिंद के चीफ मौलाना अरशद मदनी ने कहा कि गैर-मुस्लिम लोगों को बेटियों को को-एजुकेशन देने से परहेज करना चाहिए ताकि वो अनैतिकता की चपेट में न आएं। मौलाना मदनी ने कहा, 'अनैतिकता और अश्लीलता किसी भी धर्म की शिक्षा नहीं है। इनकी हर धर्म में निंदा की गई है क्योंकि इनसे समाज में कदाचार फैलता है। ऐसे में, मैं अपने गैर-मुस्लिम भाइयों से कहना चाहूंगा कि वे बेटियों को सह-शिक्षा देने से परहेज करें ताकि वो अनैतिकता से दूर रहें। उनके लिए अलग स्कूल कॉलेज बनाए जाएं।'

हैरान करने वाली बात है कि जिस सोच के साथ तालिबान ने अफगानिस्तान में अपनी हुकूमत का आगाज किया है, वही सोच भारत में भी दिखाई दे रही है। सवाल यही है कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में तालिबान से प्रभावित सोच का क्या काम है? सवाल ये भी है कि जिस तरह की बयानबाजी खुलेआम भारत में हो रही

है, उसे रोकने की कोशिशें क्यों नहीं की जा रही। भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था का प्राथमिक आधार यहां के नागरिकों को मिले मूलभूत अधिकार हैं। उनमें से एक अधिकार समानता का अधिकार है। इस व्यवस्था पर जब प्रश्नचिह्न खड़ा करने की कोशिश की जाती है तो देश एकजुट होकर ऐसी विभाजनकारी ताकतों का विरोध क्यों नहीं करता?महिलाओं की आजादी के लिए दुनिया के करीब हर देश में लंबी लड़ाई लड़ी है। आजादी के विकासवाद की रेखा हर देश में लगातार बढ़ती चली गई लेकिन दुर्भाग्य देखिए, जहां दुनिया आगे बढ़ रही है, वहीं अफगानिस्तान को तालिबान सैकड़ों साल पीछे लेकर जाने की तैयारी में लगा है। कल्पना करिए, एक महिला विधवा है, अपनी कमाई से अपने बच्चों को पाल रही है लेकिन तालिबान ने कह दिया कि तुम्हें नौकरी नहीं करनी है, वह भी सिर्फ इसलिए क्योंकि तुम एक महिला हो। क्या महिला होना अपराध है या फिर महिलाओं को ये तालिबानी सोच सिर्फ एक 'चीज' समझती है? हमेशा महिलाओं को गुलाम बनाकर रखने वाली सोच दुनिया के कई हिस्सों में रही है, लेकिन दुनिया ने उस सोच में बदलाव होते भी देखा है। अब सवाल ये है कि इस सोच के साथ काम करने वाले लोगों के खिलाफ दुनिया क्यों कुछ नहीं बोलती? क्यों नारीवाद का झंडा लेकर चलने वाले लोग खामोशी से इस नाइंसाफी को देख रहे हैं। क्यों एक महिला के द्वितीयक नेतृत्व में पहने वाला अमेरिका इसपर खामोश क्यों है? सैकड़ों-हजारों महिलाओं के बलिदान के बाद खुली हवा में आजाद सांसे लेकर महिलाओं के नेतृत्व में दुनिया का भूगोल बदलने की क्षमता रखने वाला भारत इसपर खामोश क्यों है? देश के अलग-अलग विश्वविद्यालयों में हरदिन किसी न किसी विषय पर विवाद करके महिलाओं की तथाकथित आजादी के झंडाबरदार बनने वाले लोग आज मुंह में दही जमाकर क्यों बैठे हैं? मैं नाराज हूं आप सबसे भी, आखिर आप क्यों चुप हैं?

क्या एकजुट होंगे जाट और मुसलमान?

बृजेश शुक्ल

उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में किसान पंचायत में जब किसान नेता अपनी मांगों को लेकर केंद्र और राज्य की योगी सरकार पर हमला कर रहे थे तो यह सवाल भी पूछा जा रहा था कि क्या किसान आंदोलन उत्तर प्रदेश की राजनीति में कोई नया अध्याय लिखने जा रहा है। यह प्रश्न लाजिमी है क्योंकि राज्य में किसान आंदोलन का सर्वाधिक असर पश्चिम के कुछ जिलों में है। यह वह भूमि है, जहां कभी किसान नेता चौधरी चरण सिंह का डंका बजता था, लेकिन धीरे-धीरे उनका यह गढ़ कमजोर होता चला गया। हालत यह हो गई कि 2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव और 2017 के विधानसभा चुनाव में राष्ट्रीय लोकदल (आरएलडी) का यह गढ़ ध्वस्त हो गया। चौधरी चरण सिंह की राजनीतिक विरासत के स्वामी चौधरी अजीत सिंह और उनके पुत्र जयंत चौधरी लोकसभा चुनाव हार गए। क्या किसान आंदोलन से राजनीतिक परिस्थितियों में बदलाव आएगा? क्या इस बार बीजेपी का किला पश्चिमी उत्तर प्रदेश में धराशायी हो जाएगा? क्या किसान आंदोलन उत्तर प्रदेश की राजनीति में वह परिवर्तन ला पाएगा, जो केंद्र की सत्ता को भी हिला दे? इन सवालों के जवाब तो भविष्य के गर्भ में हैं, लेकिन इतना तय है कि इस बार पश्चिम उत्तर प्रदेश में जोरदार मुकाबला होगा। इस राजनीतिक महाभारत के लिए मैदान अभी से सजने लगा है। किसान पंचायत में जुटी भारी भीड़ से आंदोलन को तो मजबूती मिलेगी ही, इससे विपक्षी दलों का हौसला भी बढ़ा होगा। किसान नेताओं को लगता है कि मुजफ्फरनगर की किसान पंचायत केंद्र सरकार को बातचीत के लिए विवश कर देगी, लेकिन चुनाव की तैयारी में लगे राजनीतिक दल इसमें अपने लिए खाद और पानी तलाश रहे हैं। विपक्षी दलों को भरोसा है कि किसान आंदोलन वह संजीवनी है, जो उनकी पार्टी के लिए वरदान साबित होगी। यह संजीवनी बीजेपी को रास्ते से हटा देगी और उन्हें सत्ता तक ले आएगी। आरएलडी मानकर चल रहा है कि यह उसके लिए अपनी खोई हुई राजनीतिक जमीन वापस पाने का अवसर है। अगर वह इसे अभी हासिल नहीं कर पाया तो आगे बड़ी मुश्किल होगी। जमीनी स्तर पर देखने से भी लगता है कि किसान आंदोलन के समर्थक और उनके कर्ता-धर्ता आरएलडी के साथ हैं। उनका झुकाव न तो ज्यादा कांग्रेस की तरफ है और ना ही बीएसपी की ओर। इसलिए आरएलडी को इस आंदोलन से कहीं ज्यादा उम्मीदें हैं। वह सफलता को लेकर आश्वस्त भी है। भारतीय किसान यूनियन से जुड़े नेता वे सारे प्रयास कर रहे हैं, जिससे वह गठजोड़ फिर कायम किया जा सके, जो चौधरी चरण सिंह ने मजबूती से तैयार किया था। यानी मुस्लिम और जाट गठजोड़। यह गठजोड़ 2013 में मुजफ्फरनगर दंगे के कारण टूट गया था। तब जाटों और मुसलमानों के बीच दरार पड़ गई थी। आज ये दोनों समुदाय एक दूसरे से जुड़ते हुए दिख रहे हैं।

यहां यह सवाल भी उठता है कि क्या किसान आंदोलन ही विपक्ष की राजनीति का खेवनहार हो सकता है? इसमें दो राय नहीं कि जाट बहुल पश्चिम उत्तर प्रदेश में न सिर्फ किसान आंदोलन को बल्कि आरएलडी को भी उतना ही मुखर समर्थन भी मिल रहा है। इसकी वजह 'जाट भूमि' को प्रभावित करने वाले मुद्दे हैं। असल में, 2019 लोकसभा चुनाव में जाटों के नाम पर राजनीति करने वाले क्षत्रपों को एहसास हो गया था कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश की राजनीतिक धारा बदल रही है। पिछले लोकसभा चुनाव में एसपी, बीएसपी और आरएलडी के गठबंधन के बावजूद अजीत सिंह और जयंत चौधरी का अपने क्षेत्रों मुजफ्फरनगर और बागपत से हार जाना बहुत बड़ी राजनीतिक घटना थी।

उस वक्त पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अति पिछड़ा और सवर्ण मतदाता बीजेपी के साथ थे। इसीलिए इतने मजबूत जातीय समीकरणों से बने महागठबंधन से बीजेपी ने कांटे की लड़ाई लड़ी थी। पिछले दो वर्ष में क्या इस समीकरण में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है? यह तो आने वाला समय बताएगा, लेकिन एक बात साफ दिखती है कि जाट मतदाता पिछली बार से कहीं ज्यादा इस बार आरएलडी के साथ खड़े हैं। इसलिए शह और मात का खेल अभी से ही शुरू हो गया है। उधर, बीजेपी साबित करने में जुटी है कि यह बड़ी-बड़ी जोत वाले कुछ लोगों का आंदोलन है और इसका आम किसानों से कुछ लेना देना नहीं है। वह समझाने में लगी है कि किसान पंचायतों में जुटने वाली भीड़ किसानों की नहीं बल्कि विपक्षी दलों के कार्यकर्ताओं की है। उसका कहना है कि अगर ये लोग किसान होते तो आंदोलन का असर उत्तर प्रदेश के अन्य हिस्सों में भी होता। पिछड़ों और सवर्ण बहुल गांव में जाने से आंदोलन के बारे में सुर बदले दिखते हैं। इसमें दो राय नहीं है कि पिछड़ों के बीच बीजेपी की पकड़ अभी भी मजबूत बनी हुई है। दूसरी ओर, किसान आंदोलन से जुड़े नेताओं ने शुरुआत में गलती की थी। उन्होंने तब किसान की जगह खाप पंचायतें आयोजित कीं और यह उनके पक्ष में नहीं गया। अब किसान नेता सतर्क हैं और वे किसी भी कीमत पर इसे किसान आंदोलन ही बनाए रखना चाहते हैं। उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि आंदोलन के जाति विशेष का होने का संदेश न जाए।

अनजान बुखार का मासूमों पर जानलेवा प्रहार, क्या कर रही है सरकार ?

योगेश कुमार गोयल

शुरुआत में इस अनजान बुखार का प्रकोप तीन जिलों में ही देखा गया था लेकिन अब यह फिरोजाबाद, मथुरा, कासगंज, लखनऊ, आगरा, एटा, मैनपुरी, नोएडा, गाजियाबाद, मुजफ्फरनगर, शामली, सहारनपुर इत्यादि प्रदेश के 20 से अधिक जिलों तक फैल चुका है। कोरोना की तीसरी लहर की आशंका के बीच उत्तर प्रदेश में विकराल रूप धारण करता रहस्यमयी बुखार नई चुनौती बनकर उभर रहा है। कुछ डॉक्टर इस रहस्यमयी बुखार को 'इंफ्लुएंजा' वायरस मान रहे हैं तो कुछ डेंगू और कुछ अन्य डॉक्टर इसे इंफ्लुएंजा वायरस के स्वरूप में बदलाव की आशंका के तौर पर भी देख रहे हैं लेकिन अभी तक किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने में विफल रहे हैं। दरअसल इस रहस्यमयी बुखार में मरीजों में कई बीमारियों के लक्षण एक साथ नजर आ रहे हैं और बुखार के कारण सबसे ज्यादा मौतें बच्चों की हो रही हैं। लगभग सभी मामलों में तेज बुखार के साथ तेजी से प्लेटलेट्स गिरने, नजला-खांसी, जोड़ों में दर्द, डिहाइड्रेशन जैसे लक्षण देखे जा रहे हैं।

शुरुआत में इस अनजान बुखार का प्रकोप तीन जिलों में ही देखा गया था लेकिन अब यह फिरोजाबाद, मथुरा, कासगंज, लखनऊ, आगरा, एटा, मैनपुरी, नोएडा, गाजियाबाद, मुजफ्फरनगर, शामली, सहारनपुर इत्यादि प्रदेश के 20 से अधिक जिलों तक फैल चुका है और प्रत्येक जिले में प्रतिदिन औसतन पांच सौ नए मरीज मिल रहे हैं, जिनमें बच्चों की संख्या सर्वाधिक है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक अभी तक विभिन्न जिलों में 150 से भी ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है, जिनमें करीब 50 फीसदी बच्चे हैं। सबसे बुरी हालत फिरोजाबाद जिले की है, जहां अब तक 80 से भी ज्यादा लोगों की मृत्यु हो चुकी है। इस जिले में पिछले कुछ ही दिनों में 60 से भी ज्यादा बच्चों की मौत रहस्यमयी बुखार से हुई है। इसके अलावा सीतापुर में 50, मथुरा में 21 तथा मैनपुरी में भी 13 से ज्यादा लोगों की मौत होने की पुष्टि की जा चुकी है। कई अन्य जिलों में भी इस बुखार के कारण मौतों का आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है। फिरोजाबाद और आसपास के इलाकों में तो डेंगू, वायरल बुखार, स्क्रब टाइफस और लेप्टोस्पायरोसिस के मरीज भी मिले हैं। बच्चों की हो रही मौतों से प्रभावित इलाकों में इस कदर खौफ व्याप्त है कि कुछ लोग भय के कारण गांव छोड़कर जा रहे हैं। प्रदेश के कुछ गांवों में रहस्यमयी बुखार का खौफ इतना ज्यादा है कि गांव के अधिकांश परिवार अपने बच्चों को लेकर पलायन कर चुके हैं। रहस्यमयी बुखार को लेकर स्थिति इतनी खराब है कि अधिकांश जगहों पर अस्पतालों में जांच के लिए लंबी-लंबी कतारें लगी हैं, लगभग सभी अस्पतालों में बैड फुल हैं और एक-एक बैड पर दो से चार बच्चों का एक साथ इलाज हो रहा है लेकिन डॉक्टरों के प्रयासों के बाद भी ऐसे कई बच्चों को बचाने में सफलता नहीं मिल पा रही है। इस बुखार के आने के बाद पहले मरीज को ठंड लगती है और फिर तेजी से बुखार बढ़ता है। दवा खाने से एक बार बुखार उतर जाता है लेकिन फिर तेजी से बुखार आता है और मरीज की स्थिति बिगड़ जाती है। बच्चों की बात करें तो इस बीमारी में पहले बच्चों के पेट में दर्द होता है, फिर बुखार आता है और प्लेटलेट्स अचानक तेजी से गिरता है। उसके बाद दो से तीन दिनों में ही ऐसे कुछ बच्चे मौत के मुंह में समा जाते हैं। कई डॉक्टर इस अनजान बुखार से हो रही मौतों का बड़ा कारण इलाज में देरी होना मानते हैं। डेंगू के साथ स्क्रब टायफस होने के कारण कई मरीजों के किडनी, लीवर सहित अन्य अंगों ने काम करना बंद कर दिया था, इस कारण भी उनकी मौत हुई। अभी तक डेंगू के वायरस के कुल चार वैरिएंट (डेन 1, 2, 3, 4) सामने आए हैं लेकिन पेट में दर्द के साथ बुखार आने के दो-तीन दिनों के भीतर ही बच्चों की मौत होने से स्वास्थ्य विशेषज्ञों को इस बात की चिंता भी सता रही है कि कहीं यह डेंगू का कोई नया वैरिएंट डेन 5 तो नहीं फैल रहा है। फिरोजाबाद जिले में 50 से ज्यादा बच्चों की मौत होने के बाद मचे हड़कंप के पश्चात् केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा स्थिति का जायजा लेने के लिए एक टीम वहां भेजी गई थी। राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केन्द्र (एनसीडीसी) और राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम (एनवीबीसीडीपी) के 5 विशेषज्ञों के इस दल द्वारा फिरोजाबाद तथा आसपास से करीब 200 सैंपल लिए गए, जिनमें 100 से ज्यादा नमूनों में डेंगू की पुष्टि हुई जबकि कई नमूनों में स्क्रब टाइफस के मामले भी मिले। स्क्रब टाइफस नामक बीमारी बैक्टीरिया से होती है। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार प्रायः झाड़ियों में पाए जाने वाले मकड़ी जैसे छोटे जीव माइट अथवा छग्गर के काटने से भी स्क्रब टाइफस होता है।

बहरहाल, विशेषज्ञ दल का कहना है कि जब तक एकत्रित किए गए

नमूनों की पूरी जांच नहीं हो जाती, तब तक इस बारे में कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी। विशेषज्ञों के मुताबिक एकत्रित नमूनों की गहन जांच के बाद जो भी नतीजे सामने आएंगे, उसके बाद ही कहा जा सकेगा कि बुखार से बच्चों की इतनी बड़ी संख्या में मौत का वास्तविक कारण क्या है। रहस्यमयी बुखार के विकराल रूप धारण करने और कई बच्चों सहित अनेक लोगों की मौत हो जाने के मामले में प्रशासन और स्वास्थ्य महकमा भी कम जिम्मेदार नहीं हैं। दरअसल जब शुरुआती दौर में यह बीमारी सिर उठाने लगी थी और डेंगू के मामले भी लगातार सामने आने लगे थे, तब भी ऐसे मामलों को दबाकर उन्हें करीब एक पखवाड़े तक महज वायरल बुखार ही बताया जाता रहा। यही नहीं, बीमारी का प्रकोप बढ़ते जाने के बाद भी कीटनाशकों के छिड़काव और साफ-सफाई की ओर भी पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया। कोरोना की दूसरी लहर के दौरान स्वास्थ्य सेवाओं की चरमराई हालत का नजारा साफतौर पर देखा गया था और अब रहस्यमयी बुखार के मामले में भी जिस प्रकार का लापरवाहीपूर्ण रवैया देखा जाता रहा है, वह आम आदमी को झकझोर देने के लिए पर्याप्त है। हालांकि अब प्रदेश सरकार द्वारा भी पीड़ित बच्चों के इलाज और बीमारी के कारणों का पता लगाने के लिए 11 विशेषज्ञ डॉक्टरों की एक टीम बनाई गई है लेकिन इस मौसम में मच्छरों से पनपने वाली बीमारियों की रोकथाम के लिए की जाने वाली फॉगिंग या साफ-सफाई के मामले में संबंधित विभागों द्वारा जिस प्रकार की लापरवाही बरती जा रही है, उन पर सख्ती करने की भी सख्त जरूरत है। खासकर मासूम बच्चों पर रहस्यमयी बुखार के जानलेवा प्रहार का खौफ लोगों में जिस कदर बढ़ता जा रहा है, ऐसे में इस समय सबसे ज्यादा जरूरी यही है कि इस बात के पुख्ता प्रबंध किए जाएं कि अस्पतालों में ऐसे लोगों के इलाज में किसी भी प्रकार की कोताही नहीं बरती जाए।

अगस्त के दूसरे पखवाड़े में शेयरों की कीर्तिमान उड़ान

डॉ. हनुमन्त यादव

यदि निवेशकों ने मुनाफा बिकवाली के लिए बड़ी मात्रा में शेयरों की बिकवाली नहीं कि तो सेंसैक्स के 10 सितंबर से पहले 59 हजार बिंदु और सितंबर माह के पखवाड़े में सेंसैक्स के कोराना काल के बावजूद 60 हजारी बन जाने की पूरी संभावना है। अगस्त माह के पहले सप्ताह तक किसी ने भी सेंसैक्स के अगस्त के अंतिम पखवाड़े से सितंबर के पहले पखवाड़े तक की इस हवाई उड़ान की किसी ने भी कल्पना नहीं की थी। जुलाई माह के अंतिम कारोबार दिन 30 जुलाई को सेंसेक्स 52,586 बिंदु और निफ्टी 15,763. बिंदु पर बंद हुए थे। भारतीय शेयर बाजार में पूरे अगस्त माह में तेजी रही तथा लिवाली के कीर्तिमान बनते रहे। 31 अगस्त को सेंसैक्स 57,552.39 बिंदु और निफ्टी 17,132.39 बिंदु के स्तर पर बंद हुए। इस प्रकार जुलाई और अगस्त माह के अंतिम कारोबारी दिन सेंसैक्स में लगभग 5 हजार और निफ्टी में 2400 का अंतर था। अगस्त महीने में शेयरों में पहले कारोबारी दिन से ही तेजी रही। 13 अगस्त को भारी लिवाली के कारण सेसैक्स ने दौड़कर 55 हजार पार कर के 55,437.29 तक पहुंचने का कीर्तिमान कायम किया। दूसरा कीर्तिमान 24 अगस्त को सेंसैक्स द्वारा 56 हजार बिंदु पार करके 56,023.22 तक उड़ान भरने का बनाया गया। तीसरा कीर्तिमान 31 अगस्त को 57,600 तक पहुंचकर सेंसैक्स ने बाजार बंद के समय 57,552.39 बिंदु तक का कीर्तिमान कायम किया। सेंसैक्स का अनुसरण करते हुए निफ्टी ने भी 13 अगस्त को 16,364 और 31 अगस्त को 17,153 तक उड़ने का कीर्तिमान बनाया।

अगस्त माह में निवेशकों की आईटी., बैंकिंग, ऑटो और बिजली के शेयरों की भारी लिवाली रही। बाजार में तेजी का एक कारण अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपये की विनिमय दर में 19 प्रतिशत की तेजी भी रही। कारपोरेट के सभी सेक्टरों में तेजी रहने के कारण बाजार हरे निशान पर बंद हुए। इनमें एफएमसीजी, फायनेंस सर्विस बैंक, रियल्टी, प्रायवेट बैंक, मेंटल, आईटी, पीएसयू बैंक, फार्मा और आटो सभी शामिल थे। कोरोना वायरस महामारी की दो लहरों का सामना कर चुके देश की अर्थव्यवस्था मजबूती के साथ पटरी पर लौट रही है। भारत में ऑटोमोबाइल सेक्टर के वाहनों की बिक्री तेज हुई है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा जारी सकल घरेलू उत्पाद के आंकड़ों के अनुसार वित्त वर्ष 2021-22 की पहली तिमाही अप्रैल-जून के आंकड़ों के अनुसार, भारत की जीडीपी विकास दर 20.1 प्रतिशत रही है। भारत की जीडीपी दर चीन की जीडीपी विकास दर 7.9 प्रतिशत से बहुत बेहतर मानी जा रही है। यह देखकर विदेशी निवेशकों का उत्साह भारतीय शेयरों में निवेश में बहुत बढ़ा है। अगस्त माह में सभी कंपनियों के बाजार पूंजीकरण में बढ़ोतरी हुई है। 31 अगस्त को कुल बाजार पूंजीकरण 200 लाख करोड़ से भी अधिक हो गया है। यद्यपि टाटा कंसल्टेंसी सरीखी कंपनियों के बाजार पूंजीकरण दूसरी कंपनियों की तुलना में नीचा रहा है। इसके बावजूद 31 अगस्त को बाजार पूंजीकरण में रिलायंस के बाद दूसरे स्थान पर थी। 31 अगस्त को चुनिंदा बड़े कारपोरेट का बाजार पूंजीकरण इस प्रकार था- रिलायंस इंडस्ट्रीज 13.49 लाख करोड़ रुपए, टीसीएस 12.30 लाख करोड़ रुपए एचएडएफसी बैंक 8.18 लाख करोड़ रुपए, इंफोसिस 6.67 लाख करोड़ रुपए, हिन्दुस्तान यूनीलीवर 5.85 लाख करोड़ रुपए, एचएडएफसी हाउसिंग फायनेंस 4.48 लाख करोड़, आईसीआईसीआई बैंक 4.43 लाख करोड़ रुपए, विप्रो 3.95 लाख करोड़ रुपए, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया 3.79 लाख करोड़ रुपए, कोटक महिन्द्रा 3.40 लाख करोड़ रुपए, बजाज फायनेंस 3.62 लाख करोड़ रुपए, भारती एअरटेल 2.88 लाख करोड़ रुपए, एशियन पेंटस 2.88 लाख करोड़ रुपए, और आईटीसी लिमिटेड 2.49 लाख करोड़ रुपए।

1 सितम्बर, 2013 से प्रसिद्ध वित्तीय व साख निर्धारण संस्थान स्टेंडर्ड एंड पुअर्स के निर्देशन में सेंसेक्स को तैयार किए जाने के कारण आजकल इस बीएसई सूचकांक को एस एण्ड पी बीएसई सेंसेक्स भी कहा जाता है। बीएसई सेंसेक्स में शामिल शेयरों की कम्पनियों को दस वर्गों में बांटा गया है, ये वर्ग हैं- वित्तीय, सूचना प्रौद्योगिकी, बाजार में तेज गति से बिकने वाले उपभोक्ता वस्तुएं, परिवहन साज-सामान, तेल व प्राकृतिक गैस, पूंजीगत वस्तुएं, हेल्थ केयर, धातु, व धातु पदार्थ, टेलीकॉम तथा ऊर्जा। सेंसेक्स भारित सूचकांक है, इसमें वित्तीय शेयरों को 32 प्रतिशत, सूचना प्रौद्योगिकी शेयरों को 16 प्रतिशत, परिवहन साज-सामान को 11.5 प्रतिशत तथा बाजार में तेज गति से बिकने वाले उपभोक्ता वस्तुओं के शेयरों को 11 प्रतिशत भार दिया गया है। इस प्रकार चार वस्तु समूह को 70.5 प्रतिशत भार दिया गया है। इसलिए इन चार वर्ग के शेयरों से सेंसेक्स की दशा व दिशा प्रभावित होती है। स्टेंडर्ड एंड पुअर्स द्वारा आजकल दो प्रकार के लगभग चार दर्जन सूचकांक तैयार किए जाते हैं। पहला, सूचकांक वर्ग और दूसरा वस्तुओं के वर्गवार सूचकांक। पहले वर्ग में 31 अगस्त को सूचकांक इस प्रकार थेः- बीएसई 100 इंडेक्स 17,5956 बीएसई 200 इंडेक्स 7486, बी.एसई मिडकैप इंडेक्स 24382, बी.एसई स्मालकैप इंडेक्स 27,305, बीएसई लार्ज मिडकैप इंडेक्स 7470, बीएसई मिड-स्माल कैप इंडेक्स 6903। सूचकांक का दूसरा वर्ग अलग-अलग उद्योगों के वर्ग आधार पर बनाया गया है। उदाहरण के लिए 31 अगस्त को सूचकांक मूल्य इस प्रकार थे- बीएसई बेसिक मटेरियल इंडेक्स 5769, बीएसई इनर्जी इडेक्स 7496, सूचना प्रौद्योगिकी इंडेक्स 34,409, बीएसई मैन्यूफैक्चरिंग इंडेक्स 601, बीएसई इंफ्र स्ट्रक्चर इंडेक्स 241, बीएसई फायनेंस इंडेक्स 7784, बीएसई ऑटो इंडेक्स 22,676, बीएसई पावर इंडेक्स 2998, बीएसई मेटल इंडेक्स 20,617, बीएसई हेल्थ केयर इंडेक्स 26,754, बीएसई प्रायवेट बैंक इंडेक्स 13,358, बीएसई पब्लिक सेक्टर अंडरटेकिंग इंडेक्स 7742, बीएसई ऑयल एंड गैस इंडेक्स 17,552, आदि। 30 अगस्त से प्रारंभ हुआ भारतीय शेयर बाजार का 5 दिवसीय कारोबारी सप्ताह 3 सितंबर को समाप्त हुआ। 31 अगस्त को उड़ता हुआ। सेंसैक्स पहली बार 57 हजार का बिंदु पार करके 57,55239 पर बंद हुआ था।

आईसीसी टी-20 रैंकिंग में शेफाली वर्मा की बादशाहत बरकरार

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की युवा स्टार बल्लेबाज शेफाली वर्मा ने मंगलवार को जारी इंटरनेशनल क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की लेटेस्ट रैंकिंग में महिला टी-20 बल्लेबाजों में अपनी टॉप पोजीशन बरकरार रखी है, जबकि न्यूजीलैंड की सोफी डिवाइन ऑलराउंडरों की लिस्ट में संयुक्त रूप से टॉप पर पहुंच गई हैं। शेफाली 759 रैंकिंग प्वॉइंट्स के साथ टॉप पर हैं। ऑस्ट्रेलिया की बेथ मूनी (744) दूसरे जबकि भारतीय टी-20 टीम की उप-कप्तान स्मृति मंधाना (716) तीसरे स्थान पर हैं। ऑस्ट्रेलिया की मेग लेनिंग 709 प्वॉइंट्स के साथ चौथे जबकि सोफी एक स्थान के फायदे से 689 प्वॉइंट्स के साथ पांचवें स्थान पर हैं। सोफी ने होव में इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे टी-20 इंटरनेशनल में 50 रन बनाने के अलावा 26 रन देकर दो विकेट भी चटकाए। इस प्रदर्शन की बदौलत वे ऑलराउंडरों की लिस्ट में भी एक स्थान के फायदे से इंग्लैंड की नताली स्किवर

के साथ संयुक्त रूप से टॉप पर पहुंच गई हैं। ऑलराउंडरों की लिस्ट में भारत की दीप्ति शर्मा, ऑस्ट्रेलिया की एलिस पैरी और वेस्टइंडीज की हेली मैथ्यूज को भी एक-एक स्थान का फायदा हुआ है और ये क्रमशः चौथे, पांचवें और छठे स्थान पर हैं। वेस्टइंडीज की स्टेफनी टेलर तीन स्थान के नुकसान से सातवें स्थान पर खिसक गई हैं।बल्लेबाजी रैंकिंग में दक्षिण अफ्रीका की लिजेल ली तीन स्थान के फायदे से आठवें स्थान पर पहुंच गई हैं। बॉलिंग रैंकिंग में ऑस्ट्रेलिया की मेगन शूट दो स्थान चढ़कर दूसरे स्थान पर हैं। ऑस्ट्रेलिया की ही जेस योनासेन भी एक स्थान के फायदे के साथ चौथे स्थान पर पहुंच गई हैं। भारत की दीप्ति शर्मा भी छठे स्थान पर पहुंच गई हैं जबकि पूनम यादव आठवें स्थान पर बरकरार हैं। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी-20 इंटरनेशनल सीरीज में संयुक्त रूप से सर्वाधिक विकेट चटकाने वाली हेली मैथ्यूज सात स्थान की छलांग के साथ गेंदबाजों की रैंकिंग में टॉप 15 में पहुंच गई हैं।

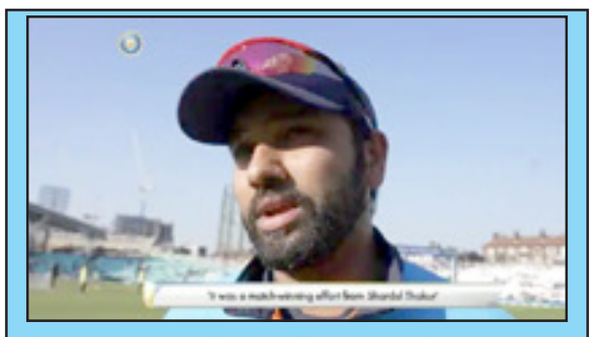

मैन ऑफ द मैच रोहित शर्मा ने बताया कौन था इस जीत का असली हीरो

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने लंदन के द ओवल मैदान पर खेले गए मैच में मेजबान इंग्लैंड को 157 रनों से पटखनी दी। इस जीत की खास बात यह रही कि इसका हीरो कोई एक खिलाड़ी नहीं था, बल्कि पूरी टीम ने मिलकर अंग्रेजों के गुरूर को तोड़ा। हेडिंग्ले टेस्ट में पारी और 76 रनों से हार झेलने के बाद टीम इंडिया ने जिस तरह से इस मैच में वापसी की उसने करोड़ों फैन्स का दिल जीत लिया। सलामी बल्लेबाज ने दूसरी पारी में 127 रन बनाए थे, जिसके लिए उन्हें मैन ऑफ द मैच चुना गया, लेकिन खुद रोहित का मानना है कि शार्दुल भी इस अवॉर्ड के हकदार थे। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) टीवी पर एक वीडियो शेयर किया गया है, जिसमें जीत के बाद टीम इंडिया के ड्रेसिंग रूम का माहौल दिखाया गया है। इस वीडियो के दौरान रोहित ने शार्दुल के योगदान के बारे में बात की है। रोहित ने कहा कि पहली पारी में शार्दुल ने जिस तरह की ताबड़तोड़ बल्लेबाजी की उससे मैच का मूमेंटम बदल गया। रोहित ने कहा, 'शार्दुल मैन ऑफ द मैच का हकदार था। उसने जो प्रदर्शन किया वह मैच विनिंग प्रदर्शन था। उसने मैच में दो पचासे जड़े और तीन अहम विकेट लिए। उसने अपने खेल पर काफी मेहनत की है, मुझे उसकी बैटिंग देखना अच्छा लगता है।

जो रूट बोले- शार्दुल ठाकुर या रोहित शर्मा नहीं बल्कि भारतीय के कारण मिली हार

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और इंग्लैंड के बीच पांच टेस्ट मैचों की सीरीज में अभी तक विराट कोहली एंड कंपनी का दबदबा देखने को मिला है। चार टेस्ट मैचों के बाद टीम इंडिया ने सीरीज में 2-1 से अजेय बढ़त बना ली है। सोमवार को लंदन के द ओवल मैदान पर खेले गए सीरीज के चौथे टेस्ट मैच के आखिरी दिन भारत ने 157 रनों से जीत दर्ज की। सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा को दूसरी पारी में 127 रन बनाने के लिए मैन ऑफ द मैच चुना गया, जबकि शार्दुल ठाकुर ने दोनों पारियों में हाफसेंचुरी जड़ी और साथ ही तीन विकेट भी लिए। इन दोनों ने इंग्लैंड के खिलाफ इस जीत में अहम भूमिका निभाई, लेकिन मैच के बाद जो रूट ने बताया किस भारतीय खिलाड़ी के चलते मेजबान टीम को हार का सामना करना पड़ा। रूट ने कहा कि मैच के आखिरी दिन लंच ब्रेक के बाद जसप्रीत बुमराह के स्पेल ने मैच का नक्शा पलट डाला।

इंग्लैंड के कप्तान जो रूट ने भी कहा कि बुमराह के स्पेल ने मैच के रुख को मोड़ दिया। उन्होंने

कहा, 'भारत को श्रेय दिया जाना चाहिए, उन्होंने गेंद को रिवर्स स्विंग कराया और वह रुख मोड़ने वाला साबित हुआ।' उन्होंने कहा, 'इस मैच से कुछ हासिल नहीं होना निराशाजनक रहा। हमें लगा कि हमारे पास जीतने का मौका है। हम पहली पारी में अधिक बढ़त बना सकते थे, और आपको वर्ल्ड क्लास खिलाड़ियों के खिलाफ मौके भुनाने होंगे।' रूट ने कहा कि इंग्लैंड को पहली पारी में 100 नहीं बल्कि कम से कम 200 रनों की बढ़त बनानी चाहिए थी। भारत ने टॉस गंवाया और इसके बाद पहली पारी में महज 191 रनों पर टीम इंडिया ऑलआउट हो गई। इंग्लैंड ने जवाब में 290 रन बनाकर विराट एंड कंपनी को दबाव में डाल दिया था। रोहित और केएल राहुल ने मिलकर दूसरी पारी में टीम इंडिया को अच्छी शुरुआत दी और इस तरह से भारत ने दूसरी पारी में 466 रन बना डाले। शार्दुल की बात करें तो उन्होंने पहली पारी में 57 और दूसरी पारी में 60 रनों की पारी खेली। इसके अलावा तीन अहम विकेट भी चटकाए। बुमराह ने लंच ब्रेक के बाद ओली पोप और जॉनी बेयरस्टो को आउट कर भारत की मैच में जीत सुनिश्चित कराई थी।

आखिरी विकेट गिरने पर जेम्स एंडरसन ने लिया रिव्यू, फैन्स बोले- ऐतिहासिक जीत का मजा किरकिरा कर दिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने लंदन के ओवल मैदान पर मेजबान इंग्लैंड को 157 रनों से हराकर पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में 2-1 से बढ़त हासिल कर ली है। भारतीय तेज गेंदबाज उमेश यादव ने जैसे ही इंग्लैंड के आखिरी विकेट जेम्स एंडरसन को ऋषभ पंत के हाथों कैच आउट कराया, वैसे ही पूरा स्टेडियम दर्शकों के शोर से गूंज उठा। हालांकि यहां भारतीय खिलाड़ी और फैन्स का ऐतिहासिक जीत के बावजूद मजा किरकिरा हो गया, क्योंकि एंडरसन ने आउट होने के बाद भी रिव्यू ले लिया, जिसकी वजह से थोड़ी देर के लिए सही, लेकिन भारत को इंतजार करना पड़ा। मैच खत्म होने के बाद भारतीय फैन्स ने सोशल मीडिया पर एंडरसन की जमकर क्लास ली है। मैच में भारतीय टीम ने दूसरी पारी में 466 रनों का विशाल स्कोर बनाकर इंग्लैंड के सामने जीत के लिए 368 रखा था, लेकिन इसके जवाब में इंग्लैंड की टीम पांचवें दिन लक्ष्य से काफी दूर रह? गई और 210 रनों पर ही सिमट गई। टीम इंडिया की ओर से उमेश यादव ने सबसे अधिक तीन विकेट अपने नाम किए, जबकि अन्य तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह और रविंद्र जडेजा ने दो-दो विकेट चटकाए। इससे पहले भारत ने पहली पारी में मात्र 191 रन बनाए थे, जबकि इंग्लैंड ने 290 रन बनाकर पहली पारी में 99 रनों की बड़ी बढ़त हासिल की थी।

मौजूदा भारतीय टीम को बाकी टीमों से बेस्ट बताने पर ट्विटर पर भिड़े बीसीसीआई अध्यक्ष सौरव गांगुली और माइकल वॉन

नई दिल्ली (एजेंसी)। विराट कोहली की कप्तानी वाली भारतीय क्रिकेट टीम ने लंदन के ओवल मैदान पर ऐतिहासिक जीत अपने नाम कर ली है। भारत ने इंग्लैंड के खिलाफ खेले गए चौथे टेस्ट मैच में मेजबान इंग्लैंड को 157 रनों से हरा दिया। भारत की ओवल में 1971 के बाद से यह पहली जीत है। इस जीत के बाद भारत ने पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में 2-1 की बढ़त हासिल कर ली है। लंदन में भारत की ऐतिहासिक जीत के बाद पूर्व कप्तान और भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के अध्यक्ष सौरव गांगुली ने टीम इंडिया की तारीफ की है। गांगुली ने मौजूदा भारतीय टीम को दुनिया के बाकी अन्य टीमों से बेस्ट बताया है। गांगुली का यह बयान इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन को हजम नहीं हुई है।

गांगुली ने ट्विटर पर भारतीय टीम को जीत की बधाई देते हुए लिखा, ' शानदार प्रदर्शन...स्किल सबसे बड़ा फर्क पैदा करता है लेकिन लेकिन सबसे बड़ा अंतर

प्रेशर झेलने की क्षमता का रहा। इस समय भारत की मौजूदा टीम दुनिया की अन्य बाकी टीमों से काफी आगे है।' बीसीसीआई अध्यक्ष का यह बयान इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन को रास नहीं आ रहा है। वॉन ने तुरंत कमेंट करके गांगुली की बातों का जवाब दे दिया। गांगुली की बातों से असहमत होते हुए वॉन ने ट्विटर पर लिखा कि भारतीय टीम व्हाइट बॉल क्रिकेट– वनडे और टी20 में बाकी से बेहतर नहीं है। हालांकि, पूर्व इंग्लिश कप्तान ने स्वीकार किया कि मौजूदा भारतीय टीम टेस्ट क्रिकेट में बाकी की टीमों की तुलना में बेहतर है। माइकल वॉन ने अपने ट्वीट में लिखा, ' भारतीय टीम केवल टेस्ट क्रिकेट में बेहतर है। लिमिटेड ओवर्स क्रिकेट में वो सबसे बेहतर नहीं हैं।'माइकल वॉन ने इससे पहले चौथे टेस्ट में शार्दुल ठाकुर को मैन ऑफ द मैच अवॉर्ड नहीं देने पर सवाल खड़ा किया। मैच की दूसरी पारी में सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा ने 127 रनों की शतकीय पारी खेली। उनकी इस पारी के दम पर भारत अपनी दूसरी पारी में 466 रन बनाने में सफल रहा। रोहित को उनके आठवें शतक के लिए मैच के बाद मैन ऑफ द मैच के अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। वॉन ने कहा कि मैच की दोनों पारियों में बल्ले से कमाल की पारी खेलने वाले और गेंदबाजी में अहम मोड़ पर टीम को सफलता दिलाने वाले शार्दुल ठाकुर को मैन ऑफ द मैच का अवॉर्ड मिलना चाहिए था। ठाकुर ने पहली पारी में 36 गेंदों पर 57 और दूसरी पारी में 72 गेंदों पर 60 रनों की पारी खेली। उन्होंने साथ ही गेंदबाजी में भी चार अहम विकेट चटकाए।

रवि शास्त्री के कोविड-19 पॉजिटिव होने के बाद विराट कोहली और हेड कोच से हो सकती है पूछताछ, बीसीसीआई मांग सकता है जवाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के हेड कोच रवि शास्त्री ओवल टेस्ट के दौरान कोविड-19 टेस्ट में पॉजिटिव पाए गए, जिसके बाद से वह आइसोलेशन में हैं। शास्त्री के साथ-साथ फील्डिंग कोच आर श्रीधर, बॉलिंग कोच भरत अरुण और फिजियोथैरपिस्ट नितिन पटेल को भी आइसोलेशन में रखा गया है। इन सभी को शास्त्री के क्लोज कॉन्टैक्ट में आने के चलते आइसोलेट किया गया है। इन सबके बीच कप्तान विराट कोहली और शास्त्री से भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) पूछताछ कर सकता है। ओवल टेस्ट से पहले शास्त्री और विराट एक इवेंट में शामिल हुए थे, जिसको लेकर खबरें आ रही हैं कि इसके लिए दोनों ने इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) से इजाजत नहीं ली थी।

एक खबर के मुताबिक बीसीसीआई के एक अधिकारी ने कहा है कि इस पूरे मामले में विराट और शास्त्री से पूछताछ हो सकती है और जवाब मांगा जा सकता है। बीसीसीआई अधिकारी ने टाइम्स ऑफ इंडिया से कहा, 'इवेंट की तस्वीरें बीसीसीआई के साथ शेयर की गई हैं। इस इवेंट के चलते बोर्ड को शर्मिंदा होना पड़ा है। चौथे टेस्ट के बाद कोच और कप्तान से इसको लेकर बात की जाएगी। इसके अलावा टीम मैनेजर गिरीश डोगरे के रोल की भी इसमें जांच की जाएगी। बीसीसीआई इस पूरे मामले में ईसीबी से संपर्क में है और चाहता है कि सीरीज के बचे हुए टेस्ट में ऐसी कोई घटना ना हो। बीसीसीआई अधिकारी ने कहा, 'अभी सब बस इतना ही चाहते हैं कि रवि शास्त्री जल्द से जल्द रिकवर हो जाएं। बुधवार को टी20 वर्ल्ड कप टीम सिलेक्शन को लेकर एक मीटिंग होनी है। हो सकता है इस मीटिंग में इस मुद्दे को उठाया जाए।' ओवल टेस्ट भारत ने 157 रनों से अपने नाम किया। मैच के चौथे दिन के खेल से पहले खबर आई थी कि रवि शास्त्री कोविड-19 पॉजिटिव पाए गए हैं। शास्त्री, भरत अरुण, श्रीधर और नितिन टीम इंडिया के साथ मैनचेस्टर नहीं जाएंगे।

ओवल में भारत से हारी तो डरी इंग्लैंड, इन खिलाड़ियों को तुरंत टीम में जोड़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। लंदन के ओवल टेस्ट में अच्छी स्थिति में होने के बाद भी भारत के खिलाफ मैच गंवाने वाली इंग्लैंड ने मैनचेस्टर में होने वाले पांचवें और आखिरी टेस्ट के लिए विकेटकीपर बल्लेबाज जोस बटलर और स्पिनर जैक लीच को टीम में शामिल किया गया है। इसके अलावा सैम बिलिंग्स को टीम से रिलीज कर दिया गया है।इंग्लैंड ओल्ड ट्रैफर्ड में शुक्रवार से शुरू होने वाले निर्णायक मुकाबले से पहले टेस्ट सीरीज में 1-2 से पिछड़ रही है। स्पिनर ऑलराउंडर मोइन अली के साथ इंग्लैंड को दूसरा स्पिन विकल्प देने वाले लीच ने श्रीलंका और भारत के दौरे पर छह मैचों में 28 टेस्ट विकेट लेने के बावजूद मार्च से कोई टेस्ट नहीं खेला है। उन्होंने अभी तक 16 टेस्ट खेले हैं और 62 विकेट झटके हैं। बटलर की बात करें तो वे अपने दूसरे बच्चे के जन्म की वजह से भारत के

खिलाफ चौथे टेस्ट से नहीं खेले थे, लेकिन अब वापसी के लिए तैयार हैं।बटलर अगर पांचवें टेस्ट में उप-कप्तान के रूप में अपनी जगह फिर से हासिल करते हैं, तो जॉनी बेयरस्टो या ओली पोप में से किसी एक की जगह ले सकते हैं।इंग्लैंड ने 2007 के बाद भारत से घरेलू धरती पर सीरीज नहीं गंवाई है और अब वह पांचवें मैच में दबाव में रहेगा। पहले चारों मैच में खेलने वाले जेम्स एंडरसन को यदि रेस्ट दिया जाता है तो मार्क वुड को उनकी जगह प्लेइंग इलेवन में मौका मिल सकता है। पांचवें टेस्ट के लिए इंग्लैंड की टीम इस प्रकार है- जो रूट (कप्तान), रॉरी बर्न्स, हसीब हमीद, ऑली पोप, जॉनी बेयरस्टो, जोस बटलर, डेन लॉरेंस, मोईन अली, क्रिस वोक्स, क्रेग ऑवर्टन, ऑली रॉबिन्सन, जेम्स एंडरसन, मार्क वुड, सैम करन और जैक लीच।

रविचंद्रन अश्विन मामले में एबी डिविलियर्स ने कप्तान कोहली को किया डिफेंड, फैन्स से की खास अपील

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड के खिलाफ लगातार चौथे टेस्ट में अनुभवी आफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन को बाहर रखने के विवादित फैसले के बीच टीम इंडिया को ओवल टेस्ट में मिली जीत के बाद दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान एबी डिविलियर्स ने फैन्स से अनुरोध किया है कि वे टीम चयन और बाकी बकवास को भूलकर खेल की प्रशंसा करें। भारत ने चार तेज गेंदबाजों और एक विशेषज्ञ स्पिनर को लेकर उतरने की रणनीति लगातार चौथे टेस्ट में अपनाई। रविंद्र जडेजा को अश्विन पर तरजीह देने के लिये कप्तान विराट कोहली की काफी आलोचना भी हुई। कोहली का फैसला हालांकि सही साबित हुआ और भारत ने चौथा टेस्ट 157 रन से जीतकर सीरीज में 2-1 की बढ़त बना ली। डिविलियर्स ने ट्वीट करते हुए कहा, ' टेस्ट क्रिकेट के दर्शकों की तरह टीम चयन और अन्य बकवास के बारे में सोचना बंद करके मुकाबला, जुनून, कौशल और देशभक्ति की प्रशंसा करो जो आपकी आंखों के सामने है। आप एक अच्छे मैच से चूक रहे हैं। भारत का शानदार प्रदर्शन। शानदार कप्तानी विराट कोहली और कुछ खिलाड़ियों ने बेहतरीन खेल दिखाया। जो रूट ने भी इंग्लैंड के लिए अच्छा खेला। क्रिकेट का अच्छा प्रचार। फाइनल के लिए रोमांचित हूं।'

आईपीएल में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर के लिए खेलने वाले डिविलियर्स लीग के दूसरे चरण के लिए यूएई पहुंच गए हैं। उन्होंने आरसीबी द्वारा जारी वीडियो में कहा, ' वापसी करके बहुत अच्छा लग रहा है। फिर से सबसे मिलूंगा। कुछ खिलाड़ी इंग्लैंड में हैं लेकिन जल्दी ही आएंगे। हमारी शुरूआत अच्छी रही थी और वह लय कायम रखेंगे। मैं किसी बच्चे की तरह रोमांचित महसूस कर रहा हूं।'

आरसीबी फिलहाल आईपीएल 2021 में सात मैचों में दस अंक लेकर तीसरे स्थान पर है। आरसीबी का सामना 20 सितंबर को अबुधाबी में कोलकाता नाइट राइडर्स से होगा।

ओवल टेस्ट मैच के दौरान तिरंगे का अपमान !, पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर ने फैन्स को पढ़ाया देश भक्ति का पाठ

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम ने इंग्लैंड के खिलाफ ओवल में खेले गए चौथे टेस्ट मैच में 157 रन से शानदार जीत दर्ज करके पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में 2-1 की बढ़त हासिल कर ली है। भारत ने इंग्लैंड के सामने जीत के लिए 368 रन का लक्ष्य रखा, लेकिन मेजबान टीम 210 रन पर ढेर हो गई। दोनों टीमों के बीच पांचवां और अंतिम टेस्ट शुक्रवार से मैनचेस्टर के ओल्ड ट्रैफर्ड मैदान पर खेला जाएगा। सीरीज में जहां भारत के प्रदर्शन को लेकर चर्चा हो रही है तो वहीं पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर भारतीय फैन्स से एक वर्ग से काफी नाराज है। सीरीज में कमेंट्री कर रहे गावस्कर ने कुछ प्रशंसकों द्वारा तिरंगे का अपमान करने की ओर इशारा किया है। पूर्व कप्तान ने ऐसे फैन्स से खास अपील भी की है। मैच के दौरान स्टेडियम में मौजूद कुछ फैन्स ने भारतीय तिरंगे को लहराया, जिसपर 'वी ब्लीड ब्लू' लिखा हुआ था। गावस्कर ने ऐसे लोगों को कड़ी फटकार लगाते हुए कहा, 'आप चाहे कितने भी बड़े फैन क्यों न हों, तिरंगे का अपमान न करें। यह जैसा है, वैसा ही रहना चाहिए। उन्होंने आगे कहा, ' जो लोग भी भारत का सपोर्ट करने के लिए देश का झंडा लेकर स्टेडियम में जाते हैं उन सभी को उसका खास ध्यान रखना चाहिए। मैच देखने के लिए तिरंगा ले जाने पर कोई दिक्कत नहीं है बस उसपर कुछ लिखना नहीं चाहिए। ऐसे कई लोग हैं जो खिलाड़ियों का जोश बढ़ाने के चक्कर में सबकुछ भूल जाते हैं। उनको इस बात का खास ध्यान रखना चाहिए कि तिरंगा देश का सम्मान है। वह आपके लिए संदेश देने या किसी तरह की बातों को लिखने का सामान नहीं। जो कोई भी तिरंगा लेकर आए वह इसपर कुछ भी ना लिखे और ना ही किसी और को लिखने दें।'

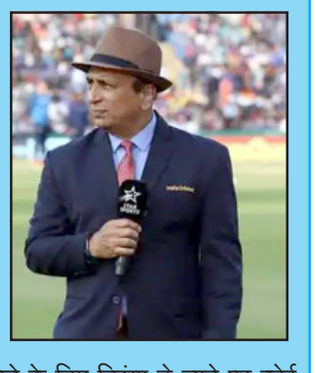

शेन वॉर्न के बाद नासिर हुसैन ने भी विराट कोहली की तारीफ में पढ़े कसीदे, कहा- उन्होंने जिसे भी छुआ वह सोना बन गया

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड के खिलाफ चौथे टेस्ट में 157 रन से शानदार जीत दर्ज करने के बाद भारतीय कप्तान विराट कोहली की हर कोई खूब तारीफ कर रहा है। ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज स्पिनर शेन वॉर्न के बाद अब इंग्लैंड के पूर्व कप्तान नासिर हुसैन भी विराट भी तारीफ करने से खुद को नहीं रोक पा रहे हैं। भारत ने चौथा टेस्ट जीतने के बाद पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में 2-1 की बढ़त बना ली है। हुसैन ने कहा कि कोहली ने अपनी कप्तानी की परीक्षा पूरे अंकों के साथ पास की क्योंकि अंतिम दिन तीनों परिणाम संभव थे। नासिर हुसैन ने द डेली मेल के लिए अपने कॉलम में लिखा, 'हर गेंदबाजी बदलाव ने काम किया, और इसी तरह उन्होंने मैदान में हर तरह का बदलाव किया। चायकाल के बाद जब दूसरी बार नई गेंद ली गई तो

विकेट सीधी सपाट होने लगी, जिसमें उमेश यादव ने क्रैग ओवर्टन को आउट किया। एक तरह से यह कोहली का एक मिडास टेस्ट था। उन्होंने मैच के अंतिम दिन जो कुछ भी किया वह कामयाब रहा, या यू कहें कि उन्होंने जिसे भी छुआ वह सोना बन गया। ऑस्ट्रेलिया को उसके ही घर में हराने के बाद भारत अब एक ऐतिहासिक सीरीज जीत से एक जीत दूर है। विराट कोहली पहले ऐसे कप्तान बन गए हैं, जिन्होंने इंग्लैंड में तीन टेस्ट मैचों में मिली जीत में भारतीय टीम की कप्तानी की है। भारत ने 1986 के बाद से पहली बार इंग्लैंड में कई टेस्ट मैच जीते हैं। हुसैन ने अपने स्पिनरों का उपयोग करने वाले दो कप्तानों के बीच के अंतर को भी बयां किया। उन्होंने इस मामले में जो रूट की आलोचना की, जिन्होंने मोईन अली को बहुत देर बाद गेंदबाजी के मोर्चे पर लगाया। उन्होंने कहा कि कोहली ने एक छोर पर स्पिन के साथ और दूसरे छोर पर अपने तेज गेंदबाजों को लगाए रखा। उन्होंने कहा, 'कोहली ने भी जडेजा का चतुराई से इस्तेमाल किया। लेकिन रूट चौथे दिन मोईन अली के साथ ऐसा करने में नाकाम रहे। अपने स्पिनर को एक छोर पर रखकर, भारत के कप्तान ने दूसरे छोर पर तेज गेंदबाजों को गेंदबाजी अटैक पर लगाए रखा। इंग्लैंड के कप्तान ने मोईन को नजरअंदाज किया। रूट ने अपने तेज गेंदबाजों को मैदान में उतारा।

करनाल में फिर होगा संग्राम? हजारों किसानों ने किया सचिवालय की तरफ कूच

प्रशासन से बातचीत फेल

करनाल (एजेंसी)। हरियाणा के करनाल जिले में एक बार फिर से अशांति फैलने की आशंका बढ़ गई है। मंगलवार को हजारों किसानों ने प्रशासन की हिदायत के बाद भी जिला मुख्यालय की ओर कूच कर दिया है। इससे पहले किसान संगठनों के नेताओं ने जिला प्रशासन के अधिकारियों से बातचीत की थी, लेकिन वह बेनतीजा रही। इसके बाद किसानों ने मुख्यालय का घेराव करने का फैसला करते हुए कूच कर दिया है। किसान संगठनों ने मांग की थी कि 28 अगस्त को जिले में हुए प्रदर्शन के दौरान लाठीचार्ज कराने वाले अधिकारियों के खिलाफ कड़ा ऐक्शन होना चाहिए वरना वे करनाल में स्थित मिनी सचिवालय का घेराव करेंगे। अधिकारियों के साथ किसानों की लंबी बैठक चली, लेकिन कोई हल नहीं निकल सका।

इसके बाद किसानों ने मिनी सचिवालय का रुख कर दिया है। वहीं प्रदेश सरकार के आदेश पर प्रशासन ने बड़ी संख्या में पुलिस और रैपिड एक्शन फोर्स के जवानों की तैनाती की है। बड़ी संख्या में किसान मंगलवार को सुबह ही ट्रैक्टरों, मोटरसाइकिलों और कारों में सवार होकर अनाज मंडी पहुंचे थे। इसके बाद 11 किसान नेताओं के डेलिगेशन को अधिकारियों ने बातचीत के लिए बुलाया था। सीनियर किसान नेता जोगिंदर सिंह उग्रहन ननने बताया कि प्रशासन के साथ हमारी बातचीत फेल रही है क्योंकि वे हमारी मांगों को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं।

बैठक फेल होने के बाद किसान नेताओं ने अपने समर्थकों से कहा कि वे एकत्रित होकर मिनी सचिवालय की ओर शांतिपूर्ण मार्च करें। अनाज मंडी से सचिवालय की दूरी 5 किलोमीटर की है। इसके साथ ही नेताओं ने किसानों से अपील की है कि वे पुलिस के जवानों से न भिड़ें और जहां भी रोका जाए, वहां विरोध प्रदर्शन करें। हजारों की संख्या में किसान अपने संगठनों के झंडे लिए हुए सचिवालय की ओर बढ़ रहे हैं। वहीं पुलिस ने रास्ते में कई जगह बैरिकेडिंग कर रखी है। आशंका है कि पुलिस के रोकने पर हिंसा की स्थिति पैदा हो सकती है।

इसी के चलते प्रशासन ने 40 कंपनियों को सुरक्षा में तैनात कर रखा है ताकि स्थिति को कंट्रोल किया जा सके। इससे पहले भारतीय किसान यूनियन के नेता राकेश टिकैत ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि हमने प्रशासन से उस आईएएस अधिकारी को निलंबित करने की मांग की थी, जिसने कथित तौर पर आंदोलनकारियों के सिर फोड़ने का आदेश पुलिस को दिया था। मुजफ्फरनगर में महापंचायत के बाद यह दूसरा बड़ा आयोजन है, जिसमें राकेश टिकैत, योगेंद्र यादव, बलबीर सिंह राजेवाल, दर्शन पाल और जोगिंदर सिंह उग्रहन जैसे सीनियर किसान नेता पहुंचे हैं। बता दें कि तीन नए कृषि कानूनों के विरोध में पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसान बीते करीब 10 महीनों से दिल्ली की सीमाओं पर आंदोलन कर रहे हैं।

केरल में धीमी हो रही कोरोना की रफ्तार?

24 घंटे में मिले 25772 नए केस, पॉजिटिविटी रेट में भी गिरावट

नई दिल्ली (एजेंसी)। केरल में कोरोना वायरस के नए मामलों में गिरावट देखने को मिली है। राज्य में मंगलवार को कोविड-19 के 25772 नए मामले सामने आए जबकि संक्रमण से 189 लोगों की मौत हुई है। राहत की बात रही है कि नए मामलों की तुलना में रिकवरी ज्यादा हुई है। राज्य में पिछले 24 घंटे में 27,320 लोग कोरोना वायरस को मात देते हुए ठीक हुए। केरल सरकार की ओर से मिली जानकारी के मुताबिक राज्य में फिलहाल एक्टिव केसों की संख्या 2,37,045 पहुंच गई है। वहीं, राज्य में कुल रिकवरी की बात करे तो अब तक 39,93,877 लोग ठीक हो चुके हैं जबकि मृतकों का कुल आंकड़ा 21,820 पहुंच गया है। कुछ दिन करीब 20 फीसदी तक पहुंचने वाले टेस्ट पॉजिटिविटी रेट (टीपीआर) में भी गिरावट देखने को मिली है।

पिछले 24 घंटों में 1,62,428 नमूनों की जांच के बाद मंगलवार को टीपीआर 15.87 प्रतिशत पाया गया। इसके साथ ही अब तक 3,26,70,564 नमूनों की जांच की जा चुकी है। आज सामने आए मामलों में 125 स्वास्थ्य कार्यकर्ता हैं जबकि 133 राज्य के बाहर के लोग हैं और 1,261 मामलों में संपर्क के स्रोत स्पष्ट नहीं है। वर्तमान में विभिन्न जिलों में 6,18,684 लोग निगरानी में हैं। इनमें से 5,85,749 होम या इंस्टीट्यूशनल क्वारंटाइन में हैं और 32,935 अस्पतालों में भर्ती हैं। राज्य में कोरोना वायरस के नए मामलों में गिरावट के बाद पिनाराई विजयन की सरकार ने प्रतिबंधों में ढील देने का निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री विजयन ने कहा कि मंमगलवार को हुई समीक्षा बैठक में रात के कर्फ्यू को हटाने और रविवार को हो रहे लॉकडाउन को वापस लेने का निर्णय लिया गया है।

स्कूल खुलने के बाद से 20 से ज्यादा छात्र और 10 टीचर हुए संक्रमित, इस राज्य में बढ़ी परेशानी

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के अलग-अलग राज्यों में स्कूल खोले जा रहे हैं। इस बीच इसके साइड इफेक्ट्स भी सामने आने लगे हैं। तमिलनाडु में स्कूल खुलने के बाद से अब तक 20 से ज्यादा छात्र और 10 टीचर्स कोविड 19 की चपेट में आ चुके हैं। यह सभी एक सितंबर से स्कूल खोले जाने के बाद आ रहे थे। एक रिर्पोट के मुताबिक सबसे हाल का केस तीन सितंबर का है, जहां चेन्नई के एक प्राइवेट स्कूल में एक छात्र कोरोना पॉजिटिव पाया गया है। एक छात्र और उसके पिता हाल ही में बेंगलुरू से लौटे थे। दोनों कोरोना पॉजिटिव पाए गए हैं। इसके बाद स्कूल के अन्य 120 छात्रों का भी कोरोना टेस्ट किया जा रहा है। राज्य के स्वास्थ्य मंत्री एमए सुब्रमण्यम ने कहा कि अगर किसी स्कूल में छात्र और अध्यापक कोरोना संक्रमित पाए जाते हैं संस्थान को तत्काल सील कर दिया जाएगा। संक्रमितों को तत्काल मेडिकल हेल्प दी जाएगी। साथ ही राज्य के अन्य स्कूलों में रैंडम टेस्ट किया जाएगा।

अफगानिस्तान में तालिबान राज से पाकिस्तान को होगा फायदा, भारत को झटका : ओवैसी

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने कहा है कि अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे से पाकिस्तान को फायदा होगा और भारत को नुकसान। दरअसल असदुद्दीन ओवैसी से पूछा गया था कि अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे से जुड़े मुद्दे का उत्तर प्रदेश के चुनाव पर कितना असर पड़ेगा? इसी सवाल के जवाब में मंगलवार को असदुद्दीन ओवैसी ने कहा कि अफगानिस्तान पर तालिबान का कब्जा भारत के लिए अच्छा नहीं है और इससे पाकिस्तान को फायदा होगा। हमारे करदाताओं के 35,000 करोड़ अफगानिस्तान में विभिन्न क्षेत्रों के विकास कार्यों के लिए खर्च किये गये हैं। अफगानिस्तान में बदलाव भारत के लिए अच्छा नहीं है। पूर्व सांसद अतीक अहमद और उनकी पत्नी शाइस्ता परवीन के एआईएमआईएम में शामिल होने के मौके पर असदुद्दीन ओवैसी पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। अतीक अहमद इस वक्त गुजरात जेल में बंद हैं और उनपर कई सारे केस पेंडिंग हैं। उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव अगले साल होने वाले हैं। चुनावों से पहले अतीक अहमद ने एआईएमआईएम का दामन थामा है। असदुद्दीन ओवैसी पूरे देश में अपनी पार्टी की पहचान बनाने के लिए मेहनत कर रहे हैं। महाराष्ट्र और बिहार में उन्हें कुछ सफलताएं भी मिली हैं। हालांकि, पार्टी को पश्चिम बंगाल में उतनी सफलता नहीं मिली है। इससे पहले 2 सितंबर को हैदराबाद में अफगानिस्तान के मुद्दे पर बातचीत करते हुए असदुद्दीन ओवैसी ने केंद्र सरकार से कहा था कि वो तालिबान को लेकर अपनी स्थिति साफ करे कि वो इसे आतंकवादी संगठन मानती है या नहीं?

एंटीलिया बम केस

'सुपरकॉप' का जलवा फिर बिखेरने को सचिन वाझे ने रची थी साजिश, चार्जशीट में दावा

नई दिल्ली (एजेंसी)। एंटीलिया केस में राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने अपनी चार्जशीट में कहा है कि निलंबित पुलिस अधिकारी सचिन वाजे ने खुद को 'सुपरकॉप' साबित करने के लिए उद्योगपति मुकेश अंबानी के घर के बाहर विस्फोटकों से लदी एसयूवी खड़ी करने की साजिश रची थी। एनआईए ने कहा है कि ठाणे के व्यापारी मनसुख हिरण को साजिश का कमजोर हिस्सा माना जा रहा था और उनकी हत्या कर दी गई। एनआईए ने अपनी चार्जशीट में आरोप लगाया कि पूर्व पुलिस अधिकारी प्रदीप शर्मा को हत्या को अंजाम देने की साजिश में शामिल किया गया। केंद्रीय एजेंसी ने 25 फरवरी को दक्षिण मुंबई में अंबानी के घर एंटीलिया के पास एसयूवी मिलने और उसके बाद हिरन की हत्या के मामले में पिछले सप्ताह यहां विशेष अदालत में वाजे और नौ अन्य के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया था। आरोप है कि गिरफ्तारी से पहले मुंबई अपराध शाखा में सहायक पुलिस निरीक्षक रहे वाजे ने अंबानी के आवास के पास एसयूवी और धमकी भरा पत्र रखने का षड़यंत्र रचा था।

आरोप पत्र में कहा गया है, ''इरादा स्पष्ट रूप से अमीर और समृद्ध लोगों को आतंकित करना

और साथ ही (उन्हें) गंभीर परिणाम भुगतने का डर दिखाकर वसूली करना था।'' एजेंसी के अनुसार वाजे ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म टेलीग्राम पर कथित रूप से ''जैश-उल-हिंद'' के नाम पर एक फर्जी पोस्ट कर इस मामले को जानबूझकर ''आतंकवादी कृत्य'' के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया।

आरोप पत्र में कहा गया है, ''धमकी भरे नोट पर 'अगली बार कनेक्ट होकर आएगा'' (अगली बार बम में तार जुड़े होंगे) लिखा होना स्पष्ट रूप से साजिश रचकर दबंग पुलिसकर्मी की अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा हासिल करने के उसकी मंशा को स्पष्ट करता है।'' एजेंसी का आरोप है कि शुरू में खुद इस मामले की जांच करने वाले वाजे ने षड़यंत्र को छिपाने के लिये जांच में गड़बड़ की।जांच एजेंसी ने दावा किया है कि इस मर्डर केस में अनिल वाजे का अहम रोल था। एनआईए के मुताबिक वाजे ने ही हिरेन को गाड़ी चोरी होने के संबंध में एफआईआ? दर्ज करवाने के लिए कहा था।सचिव वाजे ने खुद इस एसयूवी का इस्तेमाल अपराध के लिए किया था। इतना ही नहीं चार्जशीट में यह भी कहा गया है कि वाजे ने पहले हिरेन पर इस पूरी साजिश का इल्जाम डालना चाहा औ? उनसे कहा था कि वो अंबानी के घर के बाहर गाड़ी खड़ी करने की जिम्मेदारी लें। लेकिन हिरेन ने इससे इनकार कर दिया। एनआईए के मुताबिक इसके बाद मनसुख हिरेन की हत्या की साजिश रची गई। इसमें शर्मा, सुनील माणे भी शामिल थे। हिरेन की हत्या के बाद इसे आत्महत्या का रूप देने की कोशिश भी वाजे की तरफ से की गई थी।

बाल- बाल बचे: निपाह वायरस से दम तोड़ने वाले बच्चे के संपर्क में आए 8 लोगों की रिपोर्ट निगेटिव

नई दिल्ली (एजेंसी)। हाल ही में केरल को कोझिकोड में निपाह से संक्रमित होकर मौत का शिकार हुए 12 वर्षीय बच्चे के नजदीक संपर्क में आए 8 लोगों की रिपोर्ट निगटिव आई है। राज्य की स्वास्थ्य मंत्री वीना जॉर्ज ने ये जानकारी दी है। हालांकि, साथ ही उन्होंने बताया कि नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी से बाकी के पांच सैंपल्स के नतीजे आना अभी बाकी हैं। जॉर्ज ने कहा- यह हमारे लिए एक बड़ी राहत है।

जिनकी रिपोर्ट निगेटिव आई है उनमें लड़के के माता-पिता और चिकित्सा अधिकारी हैं। जैसा कि हमने 2018 में किया था, हम वायरस को ट्रैक करेंगे और प्रकोप को नियंत्रित करेंगे। बता दें कि कोझीकोड ने तीन साल में दूसरी बार निपाह संक्रमण की सूचना दी

है - 2018 में इस वायरस ने जिले में 17 लोगों की जान ले ली।

मंत्री ने कहा कि स्वास्थ्य विभाग वायरस से मरने वाले लड़के के सभी 251 संपर्कों पर नजर रख रहा है। उनमें से 54 हाई रिस्क की कैटेगरी में हैं। सरकार ने नए खतरे को देखते हुए कोझीकोड और इसके बाहरी इलाके में चल रहे कोविड-19 टीकाकरण अभियान को भी स्थगित कर दिया था। उन्होंने कहा ङ्घसंक्रमण के स्रोत का पता लगाने के प्रयास जारी हैं। विशेषज्ञों ने लड़के के घर से आधा खाया हुआ रामबूटन फल बरामद किया है। उन्हें घर के पास एक फ्रूट बैट का आवास भी मिला है'। भोपाल से राष्ट्रीय उच्च सुरक्षा पशु रोग प्रयोगशाला संस्थान की एक टीम जल्द ही शहर में होगी। फलों के चमगादड़ को वायरस का मुख्य वाहक और भंडार माना जाता है।

ग्रामीण इलाकों में 37, शहरी इलाकों में 19प्रतिशत बच्चे बिल्कुल नहीं पढ़ रहे : सर्वेक्षण

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोविड-19 की वजह से लंबे समय तक स्कूलों को बंद रखने का 'विनाशकारी प्रभाव पड़ा है। एक हालिया सर्वेक्षण में दावा किया गया है कि 37 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थी बिल्कुल पढ़ाई नहीं कर रहे हैं और 48 फीसदी बच्चों को पढ़ाई के नाम पर कुछ शब्दों के अलावा कुछ नहीं आता है। ''दि स्कूल चिल्ड्रेन्स ऑनलाइन एंड ऑफलाइन लर्निंग (एससीएचओएल) सर्वे ने '' लॉक्ड आउटः इमरजेंसी रिपोर्ट ऑन स्कूल एजुकेशन शीर्षक से सर्वेक्षण के नतीजों को जारी किया है। यह सर्वेक्षण 15 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के वंचित परिवारों से आने वाले करीब 1400 स्कूली बच्चों पर अगस्त महीने के दौरान किया गया।

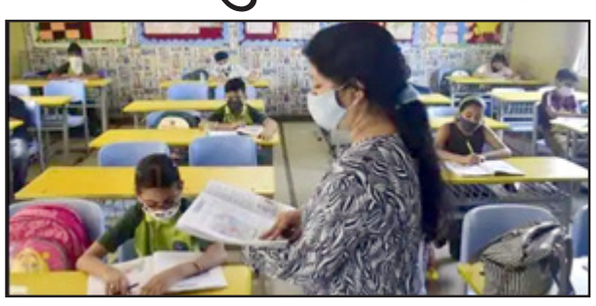

इसमें कहा गया है, ''इस सर्वेक्षण से जो तस्वीर सामने आई है वह घोर निराशाजनक है। सर्वेक्षण के समय ग्रामीण इलाकों में केवल 28 प्रतिशत बच्चे ही नियमित तौर पर पढ़ाई कर रहे थे जबकि 37 प्रतिशत बच्चे बिल्कुल पढ़ नहीं रहे हैं। सामान्य पढ़ाई की क्षमता को लेकर सर्वेक्षण के नतीजे आगाह करने वाले है क्योंकि इसमें शामिल करीब आधे बच्चे कुछ शब्दों के अलावा कुछ भी नहीं पढ़ पा रहे थे।

सर्वेक्षण में दावा किया गया है कि शहरी इलाकों में नियमित तौर पर पढ़ाई करने वाले, बिल्कुल पढ़ाई नहीं करने वाले और कुछ शब्दों से अधिक न पढ़ पाने वाले बच्चों का प्रतिशत क्रमशः 47 प्रतिशत, 19 प्रतिशत और 42 प्रतिशत है। एससीएचओओएल ने बताया कि उसका सर्वेक्षण वंचित बस्तियों पर केंद्रित था जहां पर रहने वाले बच्चे आम तौर पर सरकारी स्कूलों में पढ़ने जाते हैं। सर्वेक्षण के मुताबिक नियमित रूप से ऑनलाइन कक्षा में भाग लेने वाले विद्यार्थियों का अनुपात शहरी और ग्रामीण इलाकों में क्रमशः 24 और आठ प्रतिशत है। सर्वेक्षण में रेखांकित किया गया कि पैसे की कमी, खराब कनेक्टिविटी या स्मार्टफोन की अनुलब्धता विद्यार्थियों तक ऑनलाइन शिक्षा की सीमित पहुंच के कुछ कारण रहे। एससीएचओओएल सर्वे ने अपनी रिपोर्ट में कहा, ''इसके लिए एक कारण अध्ययन में शामिल परिवारों (ग्रामीण इलाकों में आधे) के पास स्मार्टफोन की अनुपलब्धता है। लेकिन यह महज पहली बाधा है क्योंकि जिन परिवारों के पास स्मार्टफोन है उनमें भी नियमित रूप से ऑनलाइन अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों का अनुपात कम है। शहरी इलाकों में यह अनुपात 31 प्रतिशत और ग्रामीण इलाकों में यह 15 प्रतिशत रहा। स्मार्टफोन का अक्सर इस्तेमाल परिवार में काम करने वाला वयस्क करता है और यह बच्चों के लिए उपलब्ध नहीं हो पाता, खासतौर पर दो या उससे अधिक बच्चे होने पर परिवार के छोटे सदस्य को।

सर्वेक्षण के मुताबिक वंचित परिवारों में भी दलित और आदिवासी परिवारों की स्थिति अधिक खराब है। उदाहरण के लिए ग्रामीण इलाकों में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के परिवारों के केवल चार प्रतिशत बच्चे ही नियमित तौर पर ऑनलाइन पढ़ाई करते हैं जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में अन्य विद्यार्थियों की संख्या 15 प्रतिशत है। इनमें से करीब आधे बच्चे कुछ शब्दों के अलावा कुछ भी नहीं पढ़ सकते।

कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो पर प्रदर्शनकारी ने फेंका पत्थर, बाल-बाल बचे

नई दिल्ली (एजेंसी)। कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो पर प्रदर्शनकारी ने पत्थर फेंक दिया। प्रधानमंत्री इस हमले में घायल होने से बाल-बाल बचे। घटना सोमवार को लंदन में हुई। यहां लिबरल पार्टी के नेता जस्टिन ट्रूडो एक कार्यक्रम में शामिल होने के बाद वहां से निकलने की तैयारी में थे। इसी दौरान कार्यक्रम स्थल के बाहर काफी लोग प्रदर्शन भी कर रहे थे और प्रदर्शन के दौरान प्रधानमंत्री पर पत्थर फेंका गया। प्रधानमंत्री पर पत्थर फेंके जाने का एक वीडियो भी सामने आया है। इस वीडियो में नजर आ रहा है की पीएम अपने सुरक्षा कर्मियों के साथ वहां से निकल रहे हैं। इस दौरान वहां काफी भीड़ नजर आ रही है और अचानक उनपर पत्थर से हमला किया जाता है। इस हमले में जस्टिन ट्रूडो, उनके सुरक्षा अधिकारी और पत्रकारों में से किसी भी को चोट नहीं आई है। जस्टिन ट्रूडो 20 सितंबर के मध्यावधि चुनाव के लिए देश भर में प्रचार कर रहे हैं। ट्रूडो ने अगस्त में मध्यावधि चुनाव का ऐलान किया, ताकि उनकी अल्पसंख्यक सरकार को बहुमत मिल सके।

अखंड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.

UPHIN 2001/9025

बरादर की जगह क्यों मुल्ला अखुंद बनेगा तालिबान सरकार का मुखिया, पाक से है कनेक्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। अफगानिस्तान में तालिबान की ओर से नई सरकार का ऐलान हो गया है। तालिबान की नई सरकार में मुल्ला मोहम्मद हसन अखुंद को तालिबानी सरकार का प्रधानमंत्री बनाया गया है। अब्दुल गनी बरादर को अफगानिस्तान का नया उप प्रधानमंत्री बनाया गया है। नई सरकार के ऐलान से पहले ही तालिबान की निर्णय लेने वाली शक्तिशाली इकाई रहबरी शूरा के प्रमुख मुल्ला मोहम्मद हसन अखुंद को समूह के शीर्ष नेता मुल्ला हिबतुल्लाह अखुंदजादा ने अफगानिस्तान के नए प्रमुख के रूप में नामित कर दिया था। पाकिस्तानी मीडिया की एक खबर में यह दावा किया गया था। मीडिया रिपोर्ट में कई स्रोतों का हवाला देते हुए बताया है कि दोहा में तालिबान के राजनीतिक कार्यालय के अध्यक्ष मुल्ला अब्दुल गनी

बरादर को नई सरकार में मुल्ला हसन के उप प्रमुख के रूप में काम करेंग। अखुंद को तालिबान का शीर्ष नेता बनाए जाने के पीछे पाकिस्तान कनेक्शन भी बताया जा रहा है।यह घटनाक्रम पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस (आईएसआई) के महानिदेशक लेफ्टिनेंट जनरल हमीद के पिछले हफ्ते अघोषित दौरे पर काबुल जाने के कुछ दिन बाद सामने आया है। अपने दौरे के दौरान आईएसआई प्रमुख ने मुल्ला बरादर और हिज्ब-ए-इस्लामी नेता गुलबुद्दीन हिकमतयार से मुलाकात की थी और अफगानिस्तान के मौजूदा हालात पर चर्चा की थी। खबरों के अनुसार, काबुल में नई सरकार ईरान के नेतृत्व की तर्ज पर होने वाली थी, जिसमें समूह के शीर्ष धार्मिक नेता मुल्ला हेबतुल्लाह अफगानिस्तान के सर्वोच्च अधिकारी होंगे।

अफगानिस्तान पर कब्जे के बाद इमरान सरकार को आंख दिखा रहा पाक तालिबान, कहा- हमें आतंकी न कहो

नई दिल्ली (एजेंसी)। अफगानिस्तान पर नियंत्रण के बाद तालिबान सरकार बनाने की तैयारी में है। अफगानिस्तान में तालिबान के आने का असर पाकिस्तान में दिखना शुरू हो चुका है। पाकिस्तान के हाल के दिनों में कई आतंकी हमले हुए हैं और इन हमलों के पीछे तहरीक-ए-तालिबान-पाकिस्तान (ऊऊझ्) का नाम सामने आ रहा है। सबसे हालिया आतंकी हमले में 5 सितंबर को एक आत्मघाती हमलावर ने दक्षिणी-पश्चिमी पाकिस्तान के क्वेटा के पास एक सुरक्षा चौकी के पास विस्फोट कर दिया। इसमें कम से कम 3 सुरक्षा कर्मियों की मौत हो गई और 15 लोग घायल हो गए हैं। अगस्त से लेकर अब तक ऊऊझ् पाकिस्तान पांच बड़े हमले कर चुकी है। 1 अगस्त को वजीरिस्तान में किए गए हमले में 2 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए और 9 लोग घायल हो गए। इसके बाद 8 अगस्त को ऊऊझ् ने एक मिलिट्री पोस्ट पर हमला किया। इस हमले में एक सैनिक की मौत हो गई। 13 अगस्त को वजीरिस्तान में हुए हमले में एक सैनिक की मौत हो गई थी। 18 अगस्त को एक चेकपोस्ट पर हुए हमले में एक और सैनिक की मौत हो चुकी है। पिछले दो महीने में टीटीपी पाकिस्तान में 10 हमले कर चुकी है।